

शब्दः

अजन्तुं पुंलिङ् शब्दाः

१] अकारान्तः पुलिङ् देव शब्दः :-

विभक्तिः एकवचनम् द्विवचनम् बहुवचनम्

प्रथमा → देवः देवौ देवाः

द्वितीया → देवम् देवौ देवान्

तृतीया → देवैन् देवाभ्याम् देवैः

चतुर्थी → देवाय देवाभ्याम् देवैभ्यः

पञ्चमी → देवात् देवाभ्याम् देवैभ्यः

षष्ठी → देवस्य देवैः देवानाम्

सप्तमी → देवे देवैः देवैषु

संबोधनप्रथमा → है देवे है देवौ है देवाः

२] इकारान्तं पुंलिङ् कवि शब्दः :-

विभक्तिः

प्रथमा →

एकवचनम्

द्विवचनम्

बहुवचनम्

द्वितीया →

कवि:

कवी

कवयः

तृतीया →

कविम्

कवी

कवीत्

चतुर्थी →

कवये

कविभ्याम्

कविभ्यः

पञ्चमी →

कवैः

कविभ्याम्

कविभ्यः

षष्ठी →

कवैः

कविभ्याम्

कविभ्यः

सप्तमी →

कवैः

कविभ्याम्

कविभ्यः

संबोधनप्रथमा →

कवैः

कविभ्याम्

कविभ्यः

है कवैः

कवैः

कविभ्याम्

कविभ्यः

है कवैः

कवैः

कविभ्याम्

कविभ्यः

उवं हरिः, कपि:, अग्निः इत्यादयः।

3] उकारोन्तः पुलिङ्गः भानु शब्दः :-

| विभक्ति: | पुकारचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|--------------|-----------|------------|----------|
| प्रथमा | → भानुः | भानु | भानवः |
| द्वितीया | → भानुम् | भानु | भानून् |
| तृतीया | → भानुना | भानुभ्याम् | भानुभिः |
| चतुर्थी | → भानवे | भानुभ्याम् | भानुभ्यः |
| पञ्चमी | → भानीः | भानुभ्याम् | भानुभ्यः |
| षष्ठी | → भानीः | भानवीः | भानुनाम् |
| सप्तमी | → भानी | भानवीः | भानुषु |
| संबोधनप्रथमा | → है भानी | है भानु | है भानवः |

एवं गुरुः, कुरुः, शम्भुः इत्यादयः।

4] त्रै कारोन्तः पुलिङ्गः पितृ शब्दः :-

| विभक्ति: | पुकारचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|--------------|-----------|------------|----------|
| प्रथमा | → पिता | पितरौ | पितरः |
| द्वितीया | → पितरम् | पितरौ | पितृन् |
| तृतीया | → पित्रा | पितृभ्याम् | पितृभिः |
| चतुर्थी | → पित्रे | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| पञ्चमी | → पितुः | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| षष्ठी | → पितुः | पित्रीः | पितृणाम् |
| सप्तमी | → पितरि | पित्रीः | पितृषु |
| संबोधनप्रथमा | → है पितः | है पितरौ | है पितरः |

एवं भ्राता, जामाता, इत्यादयः।

5] आ

विभ

प्रथम

द्वितीय

तृतीय

चतुर्थी

पञ्चमी

षष्ठी

सप्तमी

संबोधन

आ

विभ

प्रथम

द्वितीय

तृतीय

चतुर्थी

पञ्चमी

षष्ठी

सप्तमी

संबोधन

5] आकाशन्तः लिङ्गः गौ रात्रः :-

| <u>विभक्ति</u> | <u>पुकारनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|----------------|-----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | → गौः | गावी | गावः |
| द्वितीया | → गाम् | गावी | गा: |
| तृतीया | → गावा | गौभ्याम् | गौभिः |
| चतुर्थी | → गवे | गौभ्याम् | गौभ्यः |
| पञ्चमी | → गौः | गौभ्याम् | गौभ्यः |
| षष्ठी | → गौः | गवीः | गवाम् |
| सप्तमी | → गवि | गवीः | गौषु |
| संबोधनप्रथमा | → है गौः | है गावीः | है गावः |

अ पुर्वं सुद्धौः इत्यादयः।

अजन्तस्त्रीलिङ्गः रात्रा:

6] आकाशन्तः स्त्रीलिङ्गः रमा रात्रः :-

| <u>विभक्ति</u> | <u>पुकारनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|----------------|-----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | → रमा | रमी | रमा: |
| द्वितीया | → रमाम् | रमी | रमा: |
| तृतीया | → रमया | रमाभ्याम् | रमाभिः |
| चतुर्थी | → रमार्ये | रमाभ्याम् | रमाभ्यः |
| पञ्चमी | → रमाया; | रमाभ्याम् | रमाभ्यः |
| षष्ठी | → रमायाः | रमर्याः | रमाणाम् |
| सप्तमी | → रमायां | रमर्याः | रमासु |
| संबोधनप्रथमा | → है रमा | है रमी | है रमा: |

अ पुर्वं सीता, अहल्या, इत्यादयः।

7] इकारान्तः स्त्रीलिङ्गः मति शब्दः :-

| <u>विभक्ति:</u> | <u>एकवचनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | → मति: | मति | मतयः |
| द्वितीया | → मतिम् | मति | मतीः |
| तृतीया | → मत्या | मतिभ्याम् | मतिभिः |
| चतुर्थी | → मत्यै, मत्ये | मतिभ्याम् | मतिभ्यः |
| पञ्चमी | → मत्याः, मतैः | मतिभ्याम् | मतिभ्यः |
| षष्ठी | → मत्याः, मतैः | मत्योः | मतीनाम् |
| सप्तमी | → मत्याम्, मतौ | मत्यौः | मतिषु |
| संबोधनप्रथमा | → है मति | है मती | है मतयः |

एवं रतिः, गतिः, इत्यादयः ।

8] इकारान्तः स्त्रीलिङ्गः नदी शब्दः :-

| <u>विभक्ति:</u> | <u>एकवचनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | → नदी | नदीै | नदयः |
| द्वितीया | → नदीम् | नदीै | नदीः |
| तृतीया | → नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| चतुर्थी | → नदै | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| पञ्चमी | → नद्याः | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| षष्ठी | → नद्याः | नदीै | नदीनाम् |
| सप्तमी | → नद्याम् | नदीै | नदीषु |
| संबोधनप्रथमा | → है नदि | है नद्यै | है नदयः |

एवं नौरी, वाणी इत्यादयः ।

9] अकार
विभक्ति

| |
|----------|
| प्रथमा |
| द्वितीया |
| तृतीया |
| चतुर्थी |
| पञ्चमी |
| षष्ठी |
| सप्तमी |
| संबोधन |

10] ऋण
विभक्ति

| |
|----------|
| प्रथमा |
| द्वितीया |
| तृतीया |
| चतुर्थी |
| पञ्चमी |
| षष्ठी |
| सप्तमी |
| संबोधन |

१] ऊकारान्तः स्त्रीलिङ्: वधू शब्दः :-

| <u>विभक्ति:</u> | <u>एकवचनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा → | वधू | वधौं | वधौः |
| द्वितीया → | वधूम् | वधौं | वधूः |
| तृतीया → | वधूा | वधूभ्याम् | वधूभिः |
| चतुर्थी → | वधौं | वधूभ्याम् | वधूभ्यः |
| पञ्चमी → | वधूा | वधूभ्याम् | वधूभ्यः |
| षष्ठी → | वधौः | वधौः | वधूनाम् |
| सप्तमी → | वधौम् | वधौः | वधूषु |
| संबोधनप्रथमा → | हे वधु | हे वधौं | हे वधौः |

एवं तनु, चमू इत्यादयः ।

२] ऋकारान्तः स्त्रीलिङ्: मातृ शब्दः :-

| <u>विभक्ति:</u> | <u>एकवचनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा → | माता | मातौं | मातरः |
| द्वितीया → | मातरम् | मातौं | मातृः |
| तृतीया → | मात्रा | मातृभ्याम् | मातृभिः |
| चतुर्थी → | मात्रे | मातृभ्याम् | मातृभ्यः |
| पञ्चमी → | मातुः | मातृभ्याम् | मातृभ्यः |
| षष्ठी → | मातुः | मात्रीः | मातृणाम् |
| सप्तमी → | मातरि | मात्रीः | मातृषु |
| संबोधनप्रथमा → | हे मातः | हे मातौं | हे मातरः |

एवं उनाम्बृ, दुहिता, इत्यादयः ।

अजन्तनपुस्कलिङ् शब्दः

13] उकारा

11] अकारान्तः नपुंसकलिङ् शब्दः :-

| <u>विभक्ति:</u> | <u>एकवचनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|-----------------------------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | → फलम् | फले | फलानि |
| द्वितीया | → फलम् | फलै | फलानि |
| तृतीया | → फलैन | फलाभ्याम् | फलैः |
| चतुर्थी | → फलैय | फलाभ्याम् | फलैभ्यः |
| पञ्चमी | → फलात् | फलाभ्याम् | फलैभ्यः |
| षष्ठी | → फलैस्य | फलैः | फलानाम् |
| सप्तमी | → फलै | फलैः | फलैषु |
| संबोधनप्रथमा | → हे फल | हे फलै | हे फलानि |
| एवं धनम्, ननम्, ज्ञानम् इत्यादयः। | | | |

12] इकारान्तः नपुंसकलिङ् शब्दः :-

| <u>विभक्ति:</u> | <u>एकवचनम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>बहुवचनम्</u> |
|-----------------|--------------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | → वारि | वारिणी | वारीणि |
| द्वितीया | → वारि | वारिणी | वारीणि |
| तृतीया | → वारिणा | वारिभ्याम् | वारिणीभिः |
| चतुर्थी | → वारिणै | वारिभ्याम् | वारिभ्यः |
| पञ्चमी | → वारिणः | वारिभ्याम् | वारिभ्यः |
| षष्ठी | → वारिणः | वारिणीः | वारिणाम् |
| सप्तमी | → वारिणि | वारिणीः | वारिषु |
| संबोधनप्रथमा | → हे वारि, हे वारि | हे वारिणी | हे वारिणि |

विभक्ति
प्रथमा
द्वितीया
तृतीया
चतुर्थी
पञ्चमी
षष्ठी
सप्तमी
संबोधन

13] उकारन्तः नपुंसकलिङ्गः मधु शब्दः :-

| <u>विभासि:</u> | <u>उकारन्तम्</u> | <u>द्विवचनम्</u> | <u>त्रिवचनम्</u> |
|----------------|------------------|------------------|------------------|
| प्रथमा → | मधु | मधुनी | मधुनि |
| द्वितीया → | मधु | मधुनी | मधुनि |
| तृतीया → | मधुना | मधुभाम् | मधुभिः |
| चतुर्थी → | मधुने | मधुभ्याम् | मधुभ्यः |
| पञ्चमी → | मधुनः | मधुभ्याम् | मधुभ्यः |
| षष्ठी → | मधुनः | मधुनीः | मधुनाम् |
| सप्तमी → | मधुनि | मधुनीः | मधुषु |
| संबोधनप्रथमा → | हे मधी | हे मधुनी | हे मधुनि |

उत्तर अबु, जतु, अशु इत्यादयः ।

धर्मबद्धो दौवारिकः

The lesson Dharmabaddho Dauvarika is an extract from the Sivarajavijaya written by Sri Ambikadattavayas. Sri Vyas was born in Jaipur, Rajasthan. He had many titles such as Ghatikasata. He wrote 4 Sanskrit works among which sivarajavijaya was considered the best. This work tells the story of sivaji.

A gatekeeper was on duty at the ag gate of the fort of Pratapnadrunga. It was the early night, and the gatekeeper heard the sound of foot-steps. When he questioned who it was, no answer came. He heard the sound again. Then the gatekeeper shouted that he wanted to know who it was that desired death, क चष मामनुत्तरयन् मुमृषः समायाति बाधिरः? Then a mendicant accompanied by a young ascetic came into sight. The gatekeeper asked him why he did not introduce himself to gain entrance. The mendicant said that from then onwards the ascetics, women, children and others were to be allowed inside without any questions, आत्मानमपरिचयायान्ते २१ प्रवेष्यतः। But the gatekeeper said that he would not take orders even from the creator, but only from sivaji. महाराजशिववीरा - ज्ञां वर्ण शिरसा वहामः।

He said that it was the order of the king to kill anyone who did not respond even after questioned twice, only those who were acquainted or possessed a recommendation or invited could enter. A mendicant with a begging bowl could not gain entrance inside.

The mendicant was happy with the behavior of the gatekeeper, but wanted to test him again. He told the gatekeeper that he could not probably earn hundred or thousand gold coins as a gatekeeper, but the ascetic knew the science of making gold with a very little quantity of mercury ash. If the gatekeeper would allow him then he would reveal the secret of making gold but the gatekeeper got angry and scolded him that he was teaching to cheat his master कृत विज्ञासद्यात् समिवशन च शिक्षयसि ? then the gatekeeper caught hold of the hand of sanyasi and forcibly leads him to appear before the supervisor, the sanyasi appeared to fear and started to plead the him to forgive him but the gate keeper was valament he made the light to shine brightly to see the face having glow of king manship the gatekeeper recognized the Sanyasi as gourasimha the chief commander of the king Shivaji. The gatekeeper spoke thus Oh. you are Lt. Sriman Gourasimha please forgive my improper behaviour of a village

Hearing that Gourasimha smiled and spoke thus, Oh I am very much pleased by your behaviour and sense of responsibility towards your duty. I have tested you in various ways you are the right one who suit to the work of guard in the palace. Shivaji Raja needs such loyal servants. I will refer your name to him, go and do your duty. Thus, the gatekeeper who was not lured by attraction of sanyasi continued to do his duty near the gate.

हिमालयो नाम नगाधिराजः

हिमालय का भाव :- प्रतिपदाथः

३) अनन्तरक्षप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोप्ति जातम्।
एको हि दीषो गुणसन्निपाते निमज्जन्तीन्वयः किरणीष्विवाङ् ॥

अनन्तरक्षप्रभवस्य = the source of invaluable gems

यस्य = of whose

हिमं = snow

सौभाग्यविलोप्ति = remover of beauty

न जातम् = did not become.

ते = indeed

एको = only one

दीषः = defect

गुणसन्निपाते = among many qualities

इङ्गु = the moon

किरणीषु = in the rays

अङ्गवाङ्गत = like blemish

निमज्जन्ति = drowns.

Summary :- The one whose snow did not become the
remover of the beauty which is the source of innumera-
ble gems. Because a single defect in the multitude
of qualities will be drowned just like a blemish
which dissolves among the bright rays of the
moon

४] यज्ञाप्सरविभ्रममण्डनान् सम्पादयितीं शिखरविमति ।

बलाहकर्छदविभृत्तरामामकालसन्दग्यामित धातुमत्ताम् ॥

यज्ञा = And who

अपसरविभ्रममण्डनान् = the apsara's who have hurriedly
arrange the ornaments.

सम्पादयितीं = having cost

बलाहकर्छदविभृत्तरामाम = that which reflected in the
pieces of clouds

धातुमत्ताम् = the abundance of minerals

अकालसन्दग्यामित = like the tubelight. twilight

शिरोऽव = the peak.

विधाति = holes.

Summary :- The one who bears abundant minerals
on its peaks gives an impression of tub twilight
with the reflection on the pieces of clouds where
the apsara's hurriedly arranged their ornaments.

५] आमेषलं सञ्चरतां घनानां छग्यामधः सानुगतां निषेव ।

उद्देजिता वृष्टिभिरशयन्ते धृडाणि यस्यातपवान्ति सिद्धाः ॥

सिद्धाः = the sidhas

आमेषलं = around the griddle

सञ्चरता = moving

घनानां = the clouds

अधसानुवातं = the spreading of the peace

छग्या = shadow

निषेव = having enjoyed

वृष्टिभ

उद्देजित

यस्य =

आतप

धृडाणा

आश्रय

Summ

shelter

of low
clouds

५] पदं

विद्विति

यस्मिन्

किरता:

तुषारस्तु

हन्त्विपा

केरपरि

पदं =

अदृष्टा

वरन्ते

मुक्तापा

माग-

विद्विति

वृष्टिभः = by excessive rains

उद्विग्निः = agitated

यस्य = whose

आतपवन्ति = the heat of the sun

शृङ्गाणि = the peaks

आश्रयन्ति = take shelter.

Summary: - On whose sunny peaks the siddhas takes shelter when it rains after enjoying the shade of lower peaks it because of the shadow of the clouds which move around the griddle.

४१ पद तुषारस्तुतिदीर्घतरकं यस्मिन्नटप्पापि हतद्विपानाम् ।

विदिति मार्गं नखरन्धमुक्तमुक्तापालः करपरिणां किराताः॥

यस्मिन् = where

किराताः = the hunters

तुषारस्तुतिदीर्घतरकं = whose blood strains are washed away by the snow

हतद्विपनिम् = which killed the elephants

करपरिणि = by the lions

पद = foot prints

अटप्पापि = though not seen

वरकरे न नखरन्धमुक्तम् = fallen from the canines of

मुक्तापालः = by the pearls

मार्ग = the path

विदिति = having known.

Summary:- The hunters trap the lions which killed the elephants by the pearls dropped from the cavities of their claws even then their blood strained footprints are washed away by snow.

5] न्यस्ताक्षरा धातुरसैन यत्र भूर्जितः; कुञ्चरबिन्दुशीणाः।
वज्ञनि विद्याधरसुन्दरीणामङ् लैखकियर्पयोगम् ॥

यत्र = where

धातुरसैन = whosing of liquid

न्यस्ताक्षरा = the letters

कुञ्चरबिन्दुशीणाः = appear like red spots on the skin
of the elephant.

भूर्जितः = the bark of bhurja trees

विद्याधरसुन्दरीणाम् = the vidhyadhar women

अनङ्गलैखकियया = writing of love letters.

उपयोगम् = useful

गजनि = get

Summary:- The bark of bhurja trees with written letters appear like the red spots on the elephant will become useful to the women of vidhyadhar can for writing of love letters.

6] कपी ॥

यत्र

कपीला

करिति

यत्र

विनिन्

विद्या

सरल

स्तुतह

प्रसूत

गोद

सुरभी

Summary

from

their

itchi

7] ४: ॥

उद्गार

यः =

दरीमु

समीर

कीचि

पुरय

which
fed from
their
l away

शोणः ।
म् ॥

6] कपीलकष्टः करिभिर्विनैतुं विद्युत्ताना सरलदुमाणाम्,
यत स्तुतक्षीरतया प्रसूतः सानुनि गृह्णः सुरभीकरीति,

कपीलकष्टः = the itching of the cheeks

करिभिः = by the elephants

यत = where

विनैतु = to remove

विद्युत्ताना = rubbed against

सरलदुमाणाम् = of sarala trees

स्तुतक्षीरतया = by whoosing of milk

प्रसूतः = produced

गृह्णः = scent

सुरभीकरीति = makes fragrance

Summary:- Where the scent of the milk whoosing from the sarala trees when the elephant rubbed their cheeks against the trees to relieve from itching makes the place fragrant.

7] यः पूरयन्कीचकरन्धभागादशीमुखीत्येन समीरणेन,

उद्भास्यतामिच्छति किञ्चापि तानप्रदायित्वमिवैपगन्तुम् ॥

यः = who

दशीमुखीत्येन = produced from the mouth of the cane.

समीरणेन = by winds

किञ्चापि चकरन्धभागाद्धृत्य = the hollows of bamboo trees

पूरयन् = having filled.

उद्दृस्याताम् = singing

इच्छिति = desire.

किन्नराणां = to the kinnaras

तानप्रदायित्वमि = having side instruments

इति = like

Summary: who by filling the wholes of the bamboo with the winds raising from the mouths of the caves desires to be come decide instruments to be singing of kinnaras.

४७ वनीचराणां वनितासखाणां दरीमृहीत्सङ्गनिष्ठत्वात् ।

भवन्ति यज्ञोषधायी रजन्यामत्तेलपूरा: सुरतप्रदीपाः ॥

यज्ञ = where

ओषधायी = medicinal herbs

रजन्यामत्तेलपूरा: = illuminating without oils

उत्सङ्गनिष्ठत्वात् = brightened the interiors of the caves

वनितासखाणां = accompanied by the wives

वनीचराणां = the forest dwellers

भवन्ति = the bed lights.

Summary: where the herbs illuminated the interiors of the caves light bed lamps without oil at night to the forest dwellers accompanied by their wives

४८ ३६५

न दुः

यत् =

विष्टिभू

अत्तेल

मार्ग =

कुर्वहश्री

अथभू

मन्दा

गतिम्

नभिन्न

Sum

heavy

gait

their

४९ दिवाक

द्विवाक

यह

रक्षति

गुहासु

तत्त्वं

अन्दाज

दिवाकर

१७) "उद्देजयत्यहु लिपाणि मागान्मार्गं शिलीभूतहि ग्रीडपि यत् ।
न दुर्वहश्रीणिपर्याधरात् भिन्दन्ति मन्दां गतिमधमुख्यः ॥

यत् = where

शिलीभूतहि ग्रीडपि = the frozen snow

अङ्गानीभूतहि अङ्गलिपिभागान् = the toes and heels.

उद्देजयत्यपि = even though bitten

मार्गं = on path

दुर्वहश्रीणिपर्याधरात् = troubled by the heaviness of
the hips and the breasts.

अश्वमुर अश्वमुख्य = the horse faced women

मोदं = very slowly

गतिम् = gait

न भिन्दन्ति = do not leave

Summary: Where the horse faced women
heavy in hips and breasts do not leave their
gait even on the frozen snow path that bites
their toes and nails.

१८) दिवकिराद्रक्षति ये गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्दकारम् ।
शुद्रितपि नूनं शरणं प्रपन्नं ममतमुच्चैः शिरसां सतीव ॥

यह = who

रक्षति = protects

गुहासु = in the caves

लीनं = hidden

अन्दकारम् = darkness

दिवकिराद् = from the sun

अति॒ः प्रस्ता॑ = the laugthy ones

शरण॑ = refuge

प्रपू॒रुष = is sought

शुद्धिक॑पि = even towards a mean one

सती॒ष = it like

नृ॒न् = indeed

ममत॑ = kingship

Summary: One who protects the darkness hides in the caves of the one being afraid of the sun indeed the laugthy ones show affinity towards the mean that have sought refuge with him.

अस्युत्तरस्यां दिशि देवतामा हिमालयी नाम नगाधिराजः ।

पूर्वपूर्षीतीयनिधि वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥

अस्युत्तरस्यां = in the northern sphere

दिशि = direction

देवतामा = divine self soul

हिमालयीः नाम = by name himalaya

नगाधिराजः = king of mountains

पूर्वपूर्ष = east and west

तीयनिधि = having the oceans

वगाह्य = entered to

पृथिव्या = the earth

इव मानदण्डः = measuring rod

स्थित = stood

Summary
stood
the ki
of the
east to
12] इति

मास्वनि

संवृत्ति

ये = u

वत्से =

परिकल्पय

मर्त्य =

दीर्घारि

दीर्घदक्षि

स्थित =

पृथृपदिष्ट

दर्शित्यम्

मास्वनि

रणानि

महोषधीश्च

हुकुहु = ↑

Summary

and mil

Bruthu

herbs w

surprised

Summary:- In the northern direction there stood divine self by the name himalaya or the king of mountains was like measuring rod of the earth having entered the oceans from east to west.

12] ये सर्वशताः परिकल्प वत्सं मेरु स्थिते दौत्तरि
दीहृदके ।
भास्वन्ति रक्षानि महेषधीश पृथूपदिष्टां हुकुमुदामित्रीम् ॥

सर्वशताः = all the mountains

ये = whom

वत्सः = calf

परिकल्प = having made

मेरु = the mere mountain

दौत्तरि = ^{as a} having milked man

दीहृदके = expert in milking

स्थिते = stood

पृथूपदिष्टां = ordered by king pruthu

दौत्तरिम् = the earth

भास्वन्ति = shining

रक्षानि = with precious stones

महेषधीश = with great medicine

हुकुमुद = ^{having} milked

Summary:- All the mountain made him as calf and milked the earth that was ordered by king pruthu shining with precious stones and medicinal herbs while the expert in milking the mere mountain surprised the milking of himalaya.

हिमालयो नाम नगाधिराजः

संदर्भ वाक्यः :-

1] एकौ हि दीपौ गुणसन्निपाते निमज्जतीन्द्रौः किरणीषिवाऽः

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'हिमालयो नाम नगाधिराजः' which is extracted from the work 'Kumara Sambhavam' written by Mahakavi Kalidasa.

संदर्भः :- The author is describing the greatness of 'Himavan', thus his loftiness of his peaks resemble his personality and any fault is merged in the brightness of his good qualities.

अर्थः :- King himavan is compared to the moon in brightness as any dark spots on the moon is submerged in the brightness of the full moon so also the loftiness of the peaks is so great in himavant that any fault in him disappears in his good qualities.

2] अकांसमन्द्यामिव धातुमत्ताम् ।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'हिमालयो नाम नगाधिराजः' which is extracted from the work 'Kumara Sambhavam' written by Mahakavi Kalidasa.

संदर्भः :- The author describes beauty of himalays thus though covered with snow. The precious metals emit the bright rays. These rays provide

to reflect
themselves
in these
अर्थः :-
precious
reflection

3] उद्घार्ता

परिचयः
lesson
from the
Mahab

संदर्भः :-
of hima
air fo
buzzing
organiz
musical

अर्थः :-
musical
melodious

4] सुद्रुप्ति

परिचयः
lesson
from the
Mahab

a reflection for the apsaras who decorate themselves hurriedly will adjust their ornaments in these reflections.

अर्थः :- The bright rays emitting from the precious stones underneath the snow provide reflection of mirror to adjust their ornaments.

3] उद्धास्यता मिदृष्टि किञ्चरणां तानप्रदायित्वमिदौपनिषद्गुम्।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'हिमालयो नाम नगाधिराजः' which is extracted from the work 'Kumara Sambhavam' written by Mahakavi Kalidasa.

संदर्भः :- The author describes about the greatness of himalayas. Thus, the natural phenomenon of the air flowing freely near the caves creates a buzzing sound. This is imagined as if himavan is organizing a concert with the kinneras playing musical instruments.

अर्थः :- Himavan is said to coordinate various musical instruments played by Kinneras to form melodious music.

4] शुद्रेऽपि नूनं श्रुतं प्रपन्ने ममतमुच्चः शिरसां सतीव।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'हिमालयो नाम नगाधिराजः' which is extracted from the work 'Kumara Sambhavam' written by Mahakavi Kalidasa.

संदर्भः :- The author describes the greatness of himavan thus having noble qualities himavan is said to protect even the wicked people. The darkness who hides himself in the caves fearing the light of the sun is given protection by giving him shelter in the caves.

उत्तरः :- King himavan is described as very generous since he gives protection even to the wicked minded and darkness from the bright rays of the sun.

5] यस्याश्चयुक्तं मिरिराजसोऽ कुरुते दामोजनैश्चमः ।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'हिमोदी नाम नगाधिराजः' which is extracted from the work 'Kumara Sambhavam' written by Mahakavi Kalidasa.

संदर्भः :- The author is describing the greatness of 'Himavan' having attained the title 'Giriraja' which aptly suits him since the charmey deer wag their tail so as to fan the great king.

उत्तरः :- The wagging of the tail of the charmey deer seems to fan the great king himavan and this aptly suits him the title 'Giriraja'

6] पद्मापल

परिचयः

lesson
from t

Mahaka

संदर्भः

King
causes
making
by ser

उत्तरः :-
on the
useful

6] पद्मानि यस्याग्रसरौहानि प्रबीष्यत्युर्वमुखे मयूरः,

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'हिमालय नाम नगादिराजः', which is extracted from the work 'Kumara Sambhavam' written by Mahakavi Kalidasa.

संक्षिप्तः :- The author describes the greatness of King himavan. thus, he due to his greatness causes the sun rays to fall on the lotuses by making them bloom so that they can be used by seven rishies the worship of god.

उत्तरः :- The lotus bloom due to the sun rays on the upper region of himalayas making them useful for seven rishies to worship god.

धर्मबिद्वां दीवारिकः

सन्दर्भवाक्यानि:-

१] क इष मामनुत्तरयन् सुमूर्षु समाप्ति बाहिरः।

परिचयः :- The lesson 'धर्मबिद्वां दीवारिकः' is written by Ambika Dattavyasa! It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayan'. The lesson is taken from second chapter.

संदर्भः :- The gatekeeper of the palace Pratapadurga was doing his duty ^{by guarding} the place suddenly in the darkness, he heard noise of somebody moving near the gate. He calls for him, as he was unable to see in the darkness. The gatekeeper warned the stranger if he does not respond to his call then he will be killed.

अर्थः :- The gatekeeper said that these words to the stranger, 'Oh! who is this ^{who} poleaf desires for death!'

२] एत्यतामेष आगत्वामि, आगते च निषिद्धं निषेद्यामि।

परिचयः :- The lesson 'एत्यबिद्वां दीवारिकः' is written by Ambika Dattavyasa! It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayan'. The lesson is taken from second chapter.

संदर्भः :- The gatekeep of the palace Pratapadurga was doing his duty ^{by guarding} the place suddenly in the darkness he hear noise of somebody moving near the gate he calls for him as he was

unable
warns
his ca
अर्थः :-
the s
deadth
३] आत्मा
परिचयः
Ambik
works
from
संदर्भः
some m
around
entry
him.
अर्थः :-
to wo
if the
sanyas

४] महर्ता
परिचयः
Ambika
'Shiva
chapl

unable to see in the darkness. The gatekeeper warns the stranger if he does not respond to his call then he will be killed

Ques: - The gatekeeper says that those words to the stranger. 'Oh! who is this deaf deserves for death! Hearing the words of the gatekeeper the stranger spoke thus please forgive me here I come and will explain everything'

3] आत्मानमपरिचागयन्तीस्तु पृष्ठेऽस्याः ।

परिचय: - The lesson 'एतम् विद्धि दत्तरकः' is written by Ambika Dattavyasa. It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from second chapter.

Ans: - The gatekeeper of the palace hearing some noise calls upon ~~the~~ a stranger who was lingering around. The stranger was ~~the~~ a sanyasi who wanted entry into the palace. The gatekeeper did not allow him. The sanyasi spoke to the gatekeeper thus

Ques: - It is said that permission should be given to women, old, children, sanyasi and pandits even if they don't have any permission letter. Thus, the sanyasi spoke.

4] महाराजशिववीरस्याऽनि कर्य शिरसा वहामः ।

परिचय: - The lesson 'एतम् विद्धि दत्तरकः' is written by Ambika Dattavyasa. It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from second chapter.

संदर्भ :- When the Sanyasi was giving a speech to the gatekeeper about whom to allow into the palace. The gatekeeper got angry and spoke to Sanyasi thus

अत्र :- The gatekeeper spoke, "I shall only follow the orders of Maharaja Shivaji.

5] तदधुनैव परिष्कृतं पारदभस्म तुम्हें ददूयाम् ।

परिचय :- The lesson 'एम्बिका दत्तारिका' is written by Ambika Dattavysa. It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from 2nd chapter.

संदर्भ :- The Sanyasi in order to gain entry into the palace loored the gatekeeper that he will give him the formula for creating gold if he is allowed into the palace.

अत्र :- The Sanyasi spoke to the gatekeeper thus now itself I will disclose to you the formula for creating gold through ash if you allow me inside the palace.

6] ही कपरसन्यासिन् कर्ति विश्वासधारं स्वामिवच्यन् इति क्षयसि?

परिचय :- The lesson 'एम्बिका दत्तारिका' is written by Ambika Dattavysa. It is extracted from his work 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from 2nd chapter

संदर्भ :- Then the Sanyasi loored the gatekeeper to gain entry into the palace. The gatekeeper got angry and spoke to him thus.

अत्र :-

Oh! you
me to

7] दैवारिक

परिचय

Ambik
works
from

संदर्भ
Sanya
let

अत्र :-
stran
8] निम्न

परिचय
Ambi
works

taken

संदर्भ
light
and

अत्र :-
of
who

प्रीति :- The gatekeeper thus spoke to the thus
Oh! you are a cheater, you are teaching
me to cheat my master. How dare you?

७] दौवारिकरु तमाकृष्ण नयन्नेव पुः पृच्छोऽ।

परिचय :- The lesson 'दौवारिकरु दौवारिकोः' is written by Ambika Dattavyasa. It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from second chapter.

संदर्भ :- The gatekeeper got angry over the Sanyasi and caught hold of his hand and let him to the higher authority.

अङ्ग :- The gatekeeper caught the hand of the stranger and let him to the light.

८] निभीकण हारिपा च मुखमुडलत पर्वनिनोरुटु

परिचय :- The lesson 'निभीकण हारिपा' is written by Ambika Dattavyasa. It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from second chapter.

संदर्भ :- Leading the stranger towards the light the gatekeeper observed his face keenly and recognised him.

अङ्ग :- The gatekeeper observed that the face of the stranger was fearless and beastish whitish in colour unheathish in colour.

9] क्षमायतामनुचितव्यवहारं एतस्य ग्राम्यवराकस्य ।

परिचयः :- The lesson 'दाम्भिकी दीवारिकः' is written by Ambika Dattayasa. It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from second chapter.

संदर्भः :- Having kneeled obsequiously before the face of the stranger. A gatekeeper had recognized him to be Gowrasimha the securi personal security of Shivaraja. Immediately gatekeeper fell on his face and begged pardon.

3Tef. :- Please forgive me for my improper behaviour who is an illiterate villager.

10] दीवारिक, मथा दाम्भिकी वहूः परिक्षितोऽसि,

परिचयः :- The lesson 'दाम्भिकी दीवारिकः' is written by Ambika Dattayasa. It is extracted from his works 'Shivaraja Vijayam'. The lesson is taken from second chapter.

संदर्भः :- Gowrasimha appreciated the gatekeeper for his duty mindedness.

3Tef. :- Oh ! gatekeeper I have tested your loyalty in many ways thus Govrasimha spoke to the gatekeeper.

3Tef. :- Oh
loyalty in
spoke to

375 :- Oh ! gatekeeper I have tested your
loyalty in many ways thus Govrasinha
spoke to the gatekeeper

मुदाभिषेकसु वरदत्वमहीय

Essay:

निबन्धपृष्ठा:

दरारथेन पौरुष उवतान् श्रीरामस्य गुणान् वर्णयत्।

Introduction :- The lesson 'मुदाभिषेकसु वरदत्वमहीय' is an extract from the second canto of the Ayodhya Kanda, In the epic Ramayana written by sage Valmiki. Dasaratha's desire to make Rama the crown prince, and the acceptance of the citizens for that is the story of this lesson.

Dasaratha's Announcement:- King Dasaratha invited all the members of his council and told them in a serious and pleasing tone that his ancestors took care of the country as fathers. He also followed their path, and ruled the kingdom vigilantly. He wanted to write it with prosperity

श्रीराम याकु कामीड़िये सुरक्षाई माखिलं जगत्।

His body had become old with thousands of years of age, and he wanted to give rest to it

जीर्णस्य शरीरस्य विश्रान्तिमभिरोचयः।

He sought their permission to make

Rama
valorous
cities of
associate
hair app-
-ated we
be a v
thus be
Dasarath
anxieties
The citize
in mu
Dasarath
peacock's
rain c

दृष्टि होत

They
become a
Rama t
wanted
eager to
was rulin

The qual
in mu
the qual
many zo

बैठत

Rama

दिल्ली फूँ

Rama the crown prince. Rama was valourous like Indra and captured the cities of the enemies. He would like to associate him with the authority of the heir apparent just as the moon was associated with the star Pushyami. He would be a worthy lord to the earth. Having thus bestowed the earth to Rama, Dasaratha would be relieved of his anxieties.

The citizen's Approval:- The assembly applauded Dasaratha's announcement just as the peacock's would applaud the rumbling rain cloud.

वृष्टिमोह महामेदं नदितमिव बहिणः।

They said that as the king had become old, it was proper for him to make Rama the crown prince, then Dasaratha wanted to know why the citizens were eager to see Rama installed while Dasaratha was ruling them righteously.

The qualities of Rama! Then the citizens described the qualities of Rama saying that there were many good qualities in him. Thus

बहौ रूप कल्याणा गुणाः पुत्राः सन्ति ते।

Rama was equal to Indra in qualities

दिव्योऽस्तु शक्तयमी रामः सत्यपराक्रमः।

He outshone all the Ikshwaku kings. Rama was a gentleman devoted to truth and righteousness. He was unenvious, patient of consoling nature, grateful, self-controlled and firm-minded. He spoke pleasantly, and served and scholarly Brahmins. He was an expert in the use of the weapons of human gods and weapons demons. If he waged a war, he won it; On his return from a war he enquired the welfare of the citizens as if they were his kith and kin.

परान् सदत्तवशिष्यं कुशलं परिपृष्ठति।

He felt sad when anyone was in trouble. He was elated during their happy festivities. People all over the country desired strength health and longevity to Rama. The womenfolk elders and the youth offered prayers to the gods for the sake of Rama.

They said that it would befit Dasarath to immediately install his son who as the heir apparent.

कृतदै नास्ति निष्कृतिः

संदर्भ वाक्यः

प्र५ स एव दुर्गं तरति जलस्थी वानरो यथा!

परिचयः :- The above sentence is taken from 'Krutagne nasti nishkruthi'. It is extracted from Panchatantra written by Vishnu Sharma

संदर्भः :- The author described the phrase कृतदै नास्ति निष्कृतिः. The ungrateful ones do not have any world which is explained by the story of monkey.

प्र५ :- Just like the monkey saved its life from the crocodile who was ungrateful and tried to kill the monkey who showed affection towards it.

2] वैश्वदेवान्मापनः सौभितिः स्वगमिद्कृमः ।

प्र५ परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'कृतदै नास्ति निष्कृतिः'. It is extracted from Panchatantra written by Vishnu Sharma.

संदर्भः :- Once a certain monkey by name 'Rakthamukha' lived on a big Gambo tree. One day certain crocodile by name Karalamukha came and saw soft sand was having, seeing the crocodile the monkey offers fruits and spoke thus.

उत्तरः :- The monkey spoke thus, honouring a guest with food and water the is the gateway to the heaven.

३] यः सर्वम् अमृतप्रायाणि इदृशानि पलानि तस्य हृदयम्
अमृतमयं भविष्यति,

परिचयः :- The above ^{sentence} lesson is taken from the lesson 'कृतेऽनी नास्ति निष्कृतिः'. It is extracted from Panchatantra written by Vishnu Sharma.

संदर्भः :- The male crocodile used to take the remaining fruits and gave to his wife. One day the wife of crocodile spoke thus to her husband expressing her desire to eat the heart of the monkey which was nourished by eating the sweet fruits.

उत्तरः :- The wife of crocodile spoke thus how delicious might be the heart of the monkey which has been eating the fruit

for a
to eat
monkey

4] किमद्युय
नालपस्थि ?
परिचयः :-

lesson :-
Pancha
संदर्भः :-
the c

was a

3] उत्तरः :-
"Oh ! fr
are you
intres

5] उत्तरः
परिचयः :-
lesson :-
from

Shar
संदर्भः :-
desire

but
their

for a long time. I expressed my wish
to eat that nectar like heart of the
monkey

4] किमदूय चिरवेनाया समायातीऽसि । कस्मात् सहैतं
नोलपश्चिएः

परिचयः :- The above sentence is taken from the
lesson 'कृतदौ नासि निष्कृतिः'. It is extracted from
Panchatantra written by Vishnu Sharma

सादृशः :- Once the monkey found that
the crocodile has arrived lately and
was lost in some thoughts.

37f. :- The monkey spoke to the crocodile thus
"Oh ! friend ! why are you late today ? Why
are you looking sad ? You seem to be not
interested in studying Shastras

5] वर्जिते कीर्तिकारं मित्रं पात्रतरो नरः ।

परिचयः :- The above sentence is taken from the
lesson 'कृतदौ नासि निष्कृतिः'. It is extracted
from Panchatantra written by Vishnu
Sharma.

सादृशः :- The crocodile expressed his wife's
desire to bring monkey to their home
but the monkey was reluctant because
there was a relation of pray and

predator between himself and the crocodile
In this context the monkey gives an example thus.

उत्तरः :- The monkey spoke thus the wise man should always abandon a spider who will attract for his selfish means in a friendly manner.

6] पश्चिमी प्रतिलक्षणम्,

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'कृतदेवं नास्ति निष्कृतिः'. It is extracted from the Panchatantra written by Vishnu Sharma.

संदर्भः :- The crocodile invited the monkey to visit their home since his wife scolded him that he was a not a true friend who only receives but does not offer.

उत्तरः :- The monkey spoke to crocodile thus it is very much true in case of maintaining friendship which is characterized by six qualities.

7] विश्वा

परिचयः

the

from

Shaa

संदर्भः

nat

by

mon

उत्तरः

new

sim

ever

7] विश्वासद्वयमुत्पन्नं मूलान्यपि निष्कृताति।

(3)

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'कृतदौ नास्ति निष्कृतिः' It is extracted from Panchatantra written by Vishnu Sharma.

संदर्भः :- When the monkey realized the true nature of the crocodile it saved its life by fooling the crocodile. In this context the monkey spoke thus.

अर्थः :- Monkey spoke thus the wise man should never believe and keep trust in others totally. Since, the fear of keeping trust will cut even the roots.

हिमालयी नाम नगाधिरात्रः

Summary:-

The poem 'हिमालयी नाम नगाधिरात्रः' is an extract from the first canto of Kumarasambhava Mahakavya written by "Mahakavi Kalidasa". In this poem the greatness of Himalayas is described.

In the Northern direction there was the divine soul who is the lord of mountain named Himavant. He stood there like a measuring rod of the earth, having extended the Eastern and Western Oceans. All the mountains turned the Himavan as a calf and the mare, who is expert in milking extracted the shining gems and great herbs from the earth as ordered by the emperor Prithu. "अतोऽर्थं पृथ्वे यस्त हि अस्माय दत्त उद्धु" The snow could not become the remover of beauty to Himavant who is the source of innumerable gems because, a single defect in the multitude of many qualities will be drowned just like a blemish which dissolves among the brightest rays of the moon. Himavan bears abundant minerals on its peaks. On himavan's sunny peaks the siddhas take shelter when it rains after enjoying the shade

of lower peaks which is usefull for their penance. On the himalayas the hunters can track the route of the lions by the pearls which are dropped from their claws. The pearls belongs to the elephant when and when attacked by the lion they stick to their claws.

The Vidyadhara women use the liquids from the Bhurja trees to write love letters to their beloved, which are like the red spots on the body of the elephants. The wind from the mouth of the caves were filled in the hollows of the bamboo trees and became side musical instruments to the Kinnaras who are singing in high pitch. The elephants rubbed their cheeks to the bark of Devadaru trees to remove their itching. Then the nearby places became fragrant by the scent which was released from these trees. यौवर्णेष्टि रुद्रम्भृत्यृष्टः वृद्धपृष्ठः..

The medicinal herbs illuminated the interiors of the caves. The Kinnara ladies did not leave their gait even when the frozen snow hurted their toes and heels. Just like a noble person the himavan protects the hidden darkness in the caves from the sunlight. The chamari deers wave their tails which are white like the moon rays.

(The kinnaras enjoyed the cool air that carry the spray of the waters of heaven Ganges. The lotuses in the upper lakes were plucked by several sages. The creator Brahma offered himavan a share in Yagna. The himavan married Menaka who is worshipped even by the sages) X

By this title 'Gouri kaja' suits the king "Vishnu" himavan. The kinnaras enjoy the cool air that carry the spray of water of heavenly ganges thus bringing relief to the hunters. The lotuses which bloom to sunlight on the upper regi^{always} bank of lakes are plucked by divine sages for worship. King himavanth was given the honor of having the fruit of Yagna performed by and gods. Lord Brahma himself has adored himavanth with this honour. The great king has married Menaka the daughter of a rishi said all the sages.

कृतेऽनास्ति निष्कृतिः

Summary:-

The lesson "कृतेऽनास्ति निष्कृतिः" is an extract from "Laabdhaspranasha" of "Panchatantra" written by the great scholar "Vishnu Sharma". In this lesson the poet describes the story of a monkey and a crocodile.

There was a Jambolum tree on the bank of a sea that was full of fruits always on it. A monkey lived on that tree named Kakthamukha. One day a crocodile named Karalamukha came out from the sea to that tree. Then the monkey saw him and offered him the sweet Jambolum fruits. He treated him as a guest since he came at the end of the Vaiswadeva ritual. Having said that monkey gave him some fruits, all the crocodile also ate them happily and made friendship with the monkey. Thus everyday both of them met under the shade of that tree and talk about different topics. The crocodile ate some fruits there and offered the remaining fruits to his wife. One day, the wife of Karalamukha asked him that, from where was he getting everything such of those

sweet fruits. Then Karalamukha said that he is having a friend on the sea shore named Raktamukha and he is a monkey. He gave him those sweet fruits daily with affection.

"इदृशानि प्रलोनि भक्षयति तस्मै हृष्टं अमृतमयं

भविष्यति". Then his wife told him that the monkey was always eating that type of sweet fruits, so his heart would also be very sweet. Having eaten it, she would become deathless and overcome old age and give him all pleasures. So she asks him to bring the heart of the monkey as a gift to her if his wife that it if he loved her. Then Karalamukha says to his wife that it is not correct to kill monkey who accepted him as a brother, moreover he offered him fruits everyday. Then the lady crocodile says that he had never denied her words. She asks him that how can he maintain friendship with a monkey. So they plan to eat the sweet heart of the monkey. Later Karalamukha plan to kill the monkey and reaches him with sad face after a long time. Then the monkey enquires about his sadness. Then the crocodile says that he was scolded by his wife that he is an ingratitu-

person and neglected his friend who gave him sweet fruits and also did not invite him to their home. He asks monkey to come to his house. "असेत फटोडूह" meanwhile the monkey tells him the six true characteristics of a good friend. The crocodile convinces the monkey and make him get sit on his back. Later both were going with speed on the sea. Then the monkey was frightened by the turbulence of water. He asks Karalamukha to slow down his speed. Then crocodile reveals the secret that he is going to kill him to eat his sweet heart. But the monkey cleverly says that he kept his heart safely in the cavity of Gambolum tree. Then the crocodile takes him back to that tree. The monkey immediately jumps on the tree and saves his life. The monkey says to the crocodile that he is an ungratitude person and there is no expiation for ungratitude person. किंतु असेत फटोडूह: one who does not lose ones mind when difficulties arise, then he can get over the difficulties like the monkey in the lesson.

मुदाभिषेकं वरदत्वमहसि

संदभ गाकयः।

३] श्रीयसा योक्तुकामीडसि सुखाईमयिनं जगत्।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'मुदाभिषेकं वरदत्वमहसि'. It is extracted from 2nd canto of 'Ayodhya' 'Srimadramayanam' written by Valmiki Maharishi.

संदभः :- King Dasaratha expressed his desire to make Lord Rama as crown prince of Ayodhya city. He wished to know the opinion of the people in this regard. He spoke in the assembly thus.

अ॒षः :- Dasharatha spoke thus, with my decision I hope to have prosperity and happiness in this world

२] जीणस्यार्थं शरीरस्य विश्वानिमभिरोचये।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'मुदाभिषेकं वरदत्वमहसि'. It is extracted from 2nd canto of 'Srimadramayanam' written by Valmiki Maharishi

संदभः :-
to make
Ayodhya
opinion
spoke
become
bloody

अ॒षः :-
lived
my body
sake of

३] वृष्टिमन
परिचयः :-
lesson
from 2nd

by Va

संदभः :-
people of
author

अ॒षः :-
happiness
making
the ram

सदृष्टः :- King Dasaradha expressed his desire to make Lord Rama as crown prince of Ayodhya city. He wished to know the opinion of the people in this regard. He spoke in the assembly thus. As I have become old, I want to give rest to my body which got tired of many years of administration

३१२८ :- Dasaradha spoke thus as I have lived thousand years I want to give rest to my body which worked very hard for the sake of administration

३] वृष्णिमन्ते महामेघं नर्जलमिद बहिणः ।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'मुदाभिष्ठक्तुं द्रवद्धेति'. It is extracted from 2nd canto of 'Srimadramayanam' written by Valmiki Maharishi.

सदृष्टः :- Hearing the words of Dasaradha the people of Ayodhya city were very happy. The author described their happiness thus.

३१२९ :- The people of Ayodhya expressed their happiness and their seemed to be like peacocks making sounds of delight when they see the rumbling clouds.

4] बहवौ नृप कल्याणः गुणः पुनर्स्य सन्ति ते।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'मुदाभिषेकं वरदत्तमहसि'. It is extracted from the 2nd canto of 'Srimadhyamayayanam' written by Valmiki Maharishi.

संदर्भः :- King Dasaratha enquired the people of Ayodhya about the qualities of Rama which are suitable to make him as king. The priests and other important people were describing the virtues of Lord Rama.

उत्तरः :- The priests and important people of city spoke to king Dasaratha thus 'Oh, King Your son has many auspicious and great qualities.'

5] दिवीर्गः २क्लस्मा रामः सत्यपराक्रमः,

४॥२

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'मुदाभिषेकं वरदत्तमहसि'. It is extracted from the 2nd canto of 'Srimadhyamayayanam' written by Valmiki Maharishi.

संदर्भः :-

of Ayodhya

which

The people
were

372f. :-

'Oh king,
qualities
equal'

6] पारान्

परिचयः :-
lesson

from the
written

संदर्भः :-

of Ayodhya

which

The people
describ

372f. :-

thus

of

संग्रह: - King Dasaradha enquired the people of Ayodhya about the qualities of Rama which are suitable to make him as king.

The priests and other important people were describing the virtues of Lord Rama.

उत्तर: - The Brahmin spoke to Dasaradha thus
‘Oh king your son Rama has many divine qualities like Truth and Valour and he is equal to Indra.

६] पराम् राजनामिति कुरुते परिपूर्वकः।

परिपूर्वकः :- The above sentence is taken from the lesson ‘मुदाभिषेकं वरदमहीस’ It is extracted from the 2nd canto of Srimadayamayanam written by Valmiki Maharishi

संग्रह: - King Dasaradha enquired the people of Ayodhya about the qualities of Rama which are suitable to make him as king. The priests and other important people were describing the virtues of Lord Rama.

उत्तर: - The Brahmin spoke to King Dasaradha thus ‘Oh King Rama enquires the welfare of citizens just like a father.

7] वत्सः श्रीयसि जातस्ते दिष्ट्याम् तव राधवः ।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'मुदाभिषेकं ददेत् महेश' It is extracted from 2nd canto of Sriramadhyamayanam written by Valmiki Maharishi

31st :-
thus,
become
in well
never
29/1

संदर्भः :- King Dasaratha enquired the people of Ayodhya about the qualities of Rama which are suitable to make him as king. The priests and other important people were describing the virtues of Lord Rama.

32f. :- The Brahmin spoke to king Dasaratha thus. Oh king Rama is born to you as son because of your good fortune.

8] सरस्य लोकस्य हिते निविष्टम् ।

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'मुदाभिषेकं ददेत् महेश' It is extracted from 2nd canto of Sriramadhyamayanam written by Valmiki Maharishi

संदर्भः :- King Dasaratha enquired the people of Ayodhya about the qualities of Rama which are suitable to make him as king. The priests and other important people were describing the virtues of Lord Rama.

312f: :- The Brahmin spoke to king Dasaratha
thus, 'Oh king Lord Rama is suitable to
become the king and he is one who intended
in welfare of the whole world.'

~~versi
29/10/18~~

सूर्य

महा

महा

पर

वर

ब्र

वृद्धिसन्धि

(i) चक

तथा

प्रथम

परम

(ii) घ

ग

दि

प

म

यणादेशर

(i) इति

इति

य

सन्धयः

I. अचू-सन्धिः :-

1. स्वर्णदीर्घसन्धिः :-

(i) राम + अनुजः = रामानुजः (iii)

महा + आहि = महाहि

तस्य + आत्मा = तस्यात्मा

तथा + आगमः = तथागमः

(ii) हरि + ईश्वा = हरीश्वा

गाँरी + इयम् = गाँरीयम्

कपि + ईशः = कपीशः

वाणी + ईशः = वाणीशः

(iii) गुरु + उपदेशः = गुरुपदेशः

साधु + ऊपुः = साधूपुः

वधु + ऊहः = वधूहः

(iv) धातृ + त्रैणम् = धातृणम्

गुणसन्धिः :-

(i) तव + इव = तवैव

मुकुन्द + इति = मुकुन्देति

महा + ईशः = महैशः

(ii) नव + उदयः = नवौदयः (iii) गुरु

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

महा + उत्सवः = महीउत्सवः

महा + जर्मि = महीजर्मि

परम + ऊहः = परमौहः

(iii) वसन्त + ऋद्धुः = वसन्तर्द्धुः

ब्रह्मा + ऋषि = ब्रह्मार्षि

वृद्धिसंधि :-

(i) चक + चकः = चक्ककः

तथा + चर = तर्थव

प्रथम + चक्रवचनम् = प्रथम्चक्रवचनम्

परम + चूँश्चर्यम् = परम्चूँश्चर्यम्

(ii) घन + औदनम् = घनौदनम्

गडगा + औधः = गडगौधः

दिव्य + औषधम् = दिव्यौषधम्

परम + औदार्यम् = परमौदार्यम्

महा + औषधि = महौषधि

यणादेशसंधि :-

(i) इति + अत्र = इत्यत्र

इति + आह = इत्याह

यदि + चरं = यदीवं

(ii) गुरु + आज्ञा = गुरज्ञा

साधु + इति = साधिति

अनु + पति = अन्वेति

(ii) धातु + अर्थः = धात्रिंशः

1 वाल्मीकेः पूर्वनाम किम्? (इ)

अ)आसः आ) वाल्मीकिः इ)रत्नाकरः ई)महर्षिः

2 वाल्मीकिना विरचितं काव्यं किम् ? (आ)

अ)भागवतम् आ) रामायणम् इ) भारतम् ई)रघुवंशं

3)श्रीमद्रामायणे कति काण्डाः सन्ति? (अ)

अ)सप्त आ) दश इ) नव ई) पञ्च

4) दशरथस्य ज्येष्ठपुत्रः कः? (इ)

अ) लक्ष्मणः आ) भरतः इ)श्रीरामः ई) शतृघ्नः

5) कविताशाखां कः आरुढवान्? (आ)

अ) श्रीरामः आ) वाल्मीकिः इ)दशरथः ई) लक्ष्मणः

6) इन्दीवरश्यामः कः ? (ई)

अ) लक्ष्मणः आ)भरतः इ) शतृघ्नः ई) श्रीरामः

7) कश्यपस्य पुत्रः कः ? (आ)

अ) दधीचि आ)मारीचः इ) ऋषिश्च ई)ब्रह्मश्च

8) इक्ष्वाकुभ्यो सर्वेभ्योऽपि अतिरिक्तः कः?(ई)

अ)दशरथः आ)लक्ष्मणः इ) भरतः ई)श्रीरामः

9)मैथिली का ? (आ)

अ) कौसल्या आ) सीता इ) सुमित्रा ई) कैकेयी

10) रामायणे कति श्लोकाः सन्ति? (इ)

अ) 42000 आ)20400 इ) 24000 ई) 40,200

11)कालिदासः कस्य महाराजस्य काले आसीत्?(इ)

अ) अक्रमार्कस्य आ)भास्करस्य इ)विक्रमार्कस्य ई)श्रीहर्षस्य

12)विक्रमार्कस्य सभायां कति कवयः सन्ति? (अ)

अ) नव आ)दश इ) सप्त ई) षट्

13 मकाकवि कालिदासः कः प्रान्तीयः?(इ)

अ) अयोध्या आ) काश्मीरम् इ) उज्जयनी ई) कन्याकुमारी

14 कुमारसम्भव महाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति? (आ)

अ) षोढा आ) सप्तदश इ) अष्टादश ई) नवदश

15) हिमालयाः कस्यांदिशि सन्ति? (अ)

अ) उत्तरस्यां आ) दक्षिणस्यां इ) प्राच्यां ई) उत्तीर्छां

16 कालिदासस्य बिरुदम् किम्? (इ)

अ) राजकुलगुरुः आ) पण्डितकुलगुरुः इ) कविकुलगुरुः ई) शत्रुकुलगुरुः

17. देवानाम् इत्यत्र का विभक्तिः ?(इ)

अ) सप्तमी आ) प्रथमा इ) षष्ठी ई) तृतीया

18 गाः इत्यत्र वचनम् किम्? (इ)

अ) एकवचनम् आ) द्विवचनम् इ) बहुवचनम् ई) सर्ववचनम्

19 “कर्वौ” इति पदस्य बहुवचनरूपम् किम्? (आ)

अ) कवीनाम आ) कविषु इ) कविभिः ई) कवयः

20 मति शब्दः कस्मिन् लिङ्गे वर्तते (अ)

अ) स्त्री आ) पुं इ) नपुंसक ई) सर्वलिङ्गः

21 “शिवराजविजयः” कीदृशं काव्यं ?(आ)

अ) पद्यकाव्यं आ) गद्यकाव्यं इ) उपवाचकं ई) रूपकम्

22 शिवराजविजयः इति काव्यं केन विरचितं? (इ)

अ) विष्णुशर्मा आ) पुल्लेल श्रीरामचन्द्रः इ) अम्बिकादतव्यासः ई) कालिदासः

23. शिवरीरः कुत्र निवसति? (आ)

अ) पाटलीपुत्रे आ) प्रतापदुर्ग इ) हिमालये ई) जयपुरे

24. बीजापुरस्य सेनापतिः कः ? (ई)

अ) सल्मानखान् आ) कबीर्खान् इ) अमीर्खान् ई) अफजल्खान्

25 अन्धकारे प्रतापदुर्गम् प्रति कः आगतवान्? (अ)

अ) सन्यासी आ) पुरुषः इ) स्त्री ई)वृद्धः

26 सन्यासिना सहागतस्य बालकस्य कति वर्षाणि सन्ति?(इ)

अ) त्रयोदश् आ) एकादश इ)द्वादश ई) चतुर्दश

27. सन्यासवेषधारी जनः कः? (अ)

अ) गौरीसिंहः आ) दौवारिकः इ)बालः ईफजल् खान्

28 शिववीरस्य सेनापतिः कः? (अ)

अ) गौरीसिंहः आ) दौवारिकः इ)बालः ई)अफजल् खान्

29 पञ्चतन्त्रम् केन विरचितम्? (अ)

अ)विष्णुशर्मणा आ)नारायणपणिडतेन इ)भासेन ई)श्रीहर्षण

30 पञ्चतन्त्रे कति भागाः सन्ति? (इ)

अ)पञ्चदश आ)पञ्चाशत् इ) पञ्च ई) पञ्चविंशति

31. महिलारोप्यं नाम नगरम् कः पालयति स्म? (ई)

अ) विष्णुशर्मा आ) शिवाजीराजः इ)प्रतापरुदः ई)अमरसिंहः

32 मकरस्य नाम किम्? (इ)

अ)रक्तमुखः आ) नीतिमुखः इ)करालमुखः ई) जलमुखः

33 समुद्रस्य तटे स्थितस्य वृक्षस्य नाम किम्?(ई)

अ) तमालविटपि: आ)शाल्मलीवृक्षः इ) वटवृक्षः ई)जम्बूवृक्षः

34 रक्तमुखम् इति कस्य नाम? (अ)

अ) वानरस्य आ)मकरस्य इ)सिंहस्य ई)व्याघ्रस्य

35. रक्तमुखस्य हृदयं का इच्छाति? (इ)

अ)वानरः आ)मकरः इ) मकरस्य भार्या ई)जम्बूवृक्षः

36 कौलिकाकारं मित्रं कः वर्जयेत् ? (इ)

अ)मूर्खः आ)विद्यावतः इ) प्राज्ञः ई) मानवः

37. “धातृणाम्” इत्यत्र सन्धिः कः? (आ)

अ)गुणसन्धिः आ) सर्वर्णदीर्घः इ) वृद्धिसन्धिः ई)यण्सन्धिः

38 “ सूर्योदयः ”इत्यत्र सन्धिः कः? (आ)

अ) सवर्णः आ) गुणसन्धिः इ) अयादिसन्धिः ई) यणसन्धिः

39 “परमैश्वर्यम् ” इत्यत्र सन्धिः कः? (ई)

अ) सवर्णदीर्घसन्धिः आ) गुणसन्धिः इ)यणादेशः ई) वृद्धिसन्धिः

40 “ साधिवति” इत्यत्र कः सन्धिः? (ई)

अ)सवर्णदीर्घसन्धिः आ)गुणसन्धिः इ)यणादेशः ई) वृद्धिसन्धिः

सुनु प्रथम्य महत्वम्

सुन्दरविक्यानि:-

१] अ॒ तुष्टवृत्तिर्द्विजः कक्षित् कापीरिभवत् तदा।

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "सुनु प्रथम्य महत्वम्" which is extracted from fourth chapter of "अपोविद्यापर्व" of "महाभारतः". It is written by Vedavyasha.

सन्दर्भः :- A particular brahmin who was performing unnachha vrithi vartha which is performed thus the brahmin used to fast for the whole day and used to big arms, at the sixth hour of the day he used to consume the obtained food like this he used to live like a pigeon. This story was told by a mongoose to yudistara at the time of Raaja Surya Yaaga.

उत्तरः :- There was a brahmin who performed unnachha vrithi vartha and used to big arms and lived a life of a pigeon.

2] कुडव सर्व व्यभजन्ति तपस्विनः

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "सत्कृप्रस्थस्य महात्म" which is extracted from 4th chapter of "अठेष्ठापत" of 4] श्रुति "महाभारत". It is written by vedavyasha.

सन्दर्भः :- The mongoose spoke the above words while narrating the story of the brahmin who practiced unnachha withi vastha one day, the brahmin got some amount of sathu powder and he brought it to home.

अर्थः :- The brahmin has divided the sathu powder among his family members with first measurement.

3] स्त्रियोऽरक्ष्या ध पौष्ट्रां न लैव वक्तुमद्दसि,

कविपरिचयः :- The above sentence taken from the lesson "सत्कृप्रस्थस्य महात्म" which is extracted from 4th chapter of "अठेष्ठापत" of महाभारत. It is written by vedavyasha.

सन्दर्भः :- The mongoose spoke the above words bought it to home as the brahmin's family was about to eat. There arrived a guest the brahmin gave his share of food to the guest. But he was not satisfied. Then, the brahmin's wife offered her share of food. the brahmin spoke to wife thus

अर्थः :-
and
your
कविपरि
lesson
from
is m
Stock
ed b
the
to h
came
refuse
Sacrif
always
अर्थः :-
refer

5] सत्तु

कविपरि
lesson
four
and

Ans. :- Women should always be protected and provided for. Hence, I shall not accept your offer.

4] श्रुतिरेषा द्वि विपर्ये पितृ लोकाण् शश्वती।

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "सत्कृप्रस्थेत महात्मा" which is extracted from 4th chapter of "आश्रमदायापद" of "महाभारत". It is written by vedavyasha.

स्थोऽहि :- When the guest seemed to be unsatisfied by the food offered by the brahmin's wife the brahmin was feeling sad and doubtful as to how to satisfy him. The son of the brahmin came forward to offer his share but the brahmin refused saying that he was too young to sacrifice food but it he said that one should always respect the guest and satisfy them.

उत्तरः :- The son said thus, the brahmins are reference in all the three words.

5] सत्कृप्रस्थेत वौनागं यज्ञस्तुल्यो नराधिपा।

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "सत्कृप्रस्थेत महात्मा" which is extracted from fourth chapter of "आश्रमदायापद" of "महाभारत". It is written by vedavyasha.

सन्देशः :- The above words are spoke thus, the performance of by the mongoose relating the story of brahmin's charity to Yudhisthara and other members of court.

अतः :- The mongoose spoke thus the performance of krajaswya yagam by Yudhisthara is not equal to the charitor given by brahmin.

6] त्यक्तमानधनक्रीदा धर्मज्ञ विजयतमः

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "सत्कुप्रस्थर्य" "सत्कुप्रस्थर्य महत्वम्" which is extracted from 4th chapter of "अश्वमेहापद" of "महाभारत" and it is written by vedavyasha

सन्देशः :- The above words are spoken by the mongoose relating the story of brahmin's charity to Yudhisthara and other members of court

अतः :- The mongoose spoke thus, the brahmin's family was devoid of pride and anger and all the members walked the path of righteousness.

7] वृद्धोऽसि धारयिष्यामि त्वं बल भव पुत्रक

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "सत्कुप्रस्थर्य महत्वम्" which is extracted from 4th chapter of "अश्वमेहापद" of "महाभारत" and it is written by vedavyasha.

सन्देशः :- When the son of brahmin offered his share of food to the guest, the brahmin objected and spoke thus.

अर्थः :- The brahmin spoke thus "I having become old man can withstand the hunger and live but you are too young to withstand the hunger!"

8] यात्रं धर्मविनीपता गुरुवृत्तिमवेक्षणम्

कथितिरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "सन्तु प्रस्थापते हेतुह" which is extracted from 4th chapter of "आठवें हेतुपद" of "हेतुहारत" and it is written by vedavyasha.

सन्देशः :- When the guest are unsatisfied by the food offered by the brahmin, his wife and son also then the daughter-in-law comes forward to offer her share the brahmin first refused but later on praises her.

अर्थः :- The brahmin spoken to his daughter-in-law thus you are endowed with righteous and known how to behave with your elders.

सत्कृप्रसरेत् महाभ.

Summary:-

Introduction:- The lesson "सत्कृप्रसरेत् महाभ." is extracted from 'Ashwamechaparva' of 'Mahabharatham' written by Vedavyasa.

When Yudhishthira perform Kajaswya sacrifice, a golden headed mongoose came to the place and said thus this sacrifice was held and said that this sacrifice was held & did not have merit in comparison with the donation of barley powder given by a brahmin who lived by begging arms then proceed to tell the story thus in Kuruukshetra they lived a brahmin and his family wife, son and daughter-in-law they were practising the vow of unmaccha vrithi were the brahmin used to be fasting the food which is obtained by begging arms thus he would sustain his life along with his family members one day he was feeling extremely tired and thirsty an account of excess heat on that day he could not get any food at last he obtained sathu powder the brahmin went home and divided the little portion into four part

measuring with foost fist among his family members as there were about to eat they have a guest at the door the Brahmin welcome the guest enquired his welfare seeing the guest tired on account of journey offers him his share of barley powder the guest was not satisfied was that the wife of the Brahmin seeing this offered her share the Brahmin refused but his wife said that the dharma and artha for husband and wife are same. Hence she should be allowed to do her dharma, but the guest even after having a share of Brahmin son was not satisfied. Seeing his unsatisfaction the Brahmin son offers his share. The Brahmin refused saying thus you are too young to sustain the pain of hunger and you have a very long way to go but the son spoke thus the duty of a son is to serve his parents and free from all debts. Hence he should be allowed to give his share of food but the guest who had the son share appeared to be unsatisfied, seeing this the daughter-in-law of the Brahmin offered her share saying that she was the bearer of the pregnancy. Hence she should

be allowed to give her share to the guest after having the share of daughter-in-law was satisfied with their generosity and duty mindedness the guest revealed his true form as dharma and as a result of noble action of the Brahmin family all of them were sent to heaven. The mongoose who had tasted the leftover headed mango sathu powder by the guest was turned into golden headed mongoose by the powder of generosity shown by the Brahmin. Hence by this story one can know about the devotion shown by Brahmin in honouring the guest.

बुद्धस्य वैराग्योदयः

प्रतिपदार्थः तात्पर्यः :-

परं तु तत्स्वर्गं मिव प्रहृष्टं शुद्धादिवासाः समवैक्ष्य
देवाः ।

जीर्ण नरं निर्मिते प्रगतुं सचीदनार्थं क्षितिपात्मजस्य ॥

प्रतिपदार्थः :-

परं तु तत् = Finding that city

स्वर्गस्त्वा = As a heaven

प्रहृष्टं = Siddhartha who is happy

शुद्धादिवासाः = the Gods in the heaven

समवैक्ष्य = have observed

देवाः = those Gods

निर्मिते = created

जीर्ण नरं = one old man

प्रगतुं = to leave the home

सचीदनार्थं = in order to inspire

क्षितिपात्मजस्य = of the prince mind

Meaning :- When Siddhartha finding Mean
the city as a heaven, the Gods of
the heaven created an old man to
inspire Siddhartha to leave home.

5] क ५

भूसंवृत

प्रतिपदा

२] ततः कुमारी जरयाभिभूतं दृष्ट्वा नरेभ्यः पृथगाकृतिः
उवाच सङ्गाहकमागतस्थस्तत्रैव निष्कम्पनिविष्टदृष्टिः ॥

प्रतिपदाशः :-

ततः = Then

कुमारः = the prince Siddhartha

जरयाभिभूत = who is old

दृष्ट्वा = having seen

नरेभ्यः = from normal persons

पृथक आकृति = different in form

त = that old man

उवाच = addressed or asked

सङ्गाहकम् = to the chariot driver

आगतास्यः = with an interest to
know

तत्रैव = on that old man only

निष्कम्पनिविष्टदृष्टिः = with a concentrated
look

Meaning :- Then the prince Siddhartha with a steady look, have seen the old man and wanted to know about him, he asked the chariot driver thus.

उ] क चुप मीः सूत नरोऽभ्युपेतः केशः मितीयन्ति विष-
कर्त्ताहस्तः ।

भूसंवृताक्षः शीथिलानताङ्गः किं विक्रियेषा प्रकृतिर्यदुच्छा ॥

प्रतिपदार्थः :-

कः = who is?

चुपः = this

मीः = Oh

सूत = chariot driver

नरः = man

अभ्युपेत = coming this side

केशः = with the hair

सीतः = grey

यस्ति विषकर्त्ताहस्तः = holding a stick is his hand

भूसंवृताक्षः = eyes are closing with the eyebrows.

शीथिला नताङ्गः = parts of the body are bent

किं = why

विक्रिया चुपः = this defect

प्रकृतिः = is it by nature.

यदुर्दृष्ट = is it a sudden change?

Meaning:- Oh! Driver! The coming man
is what type? His hair is grey. He is asked
holding a stick in his hands. The eyes are
closing by the eye brows. Body is bent.
What type of problem he had? It is
by nature or is it a sudden change?

4] इत्येवमुक्तः स रथपूर्णीता निवेदयामास नृपात्मजाय
सरक्ष्यमध्यथमदीषदेशी त्रैव देवः कृतबुद्धिमौहः ॥
प्रतिपदार्थः :-

इति: एत = Thus
उक्तः = was asked
सः = he
रथपूर्णीता = the driver of the chariot
निवेदयामास = explained
नृपात्मजाय = to that prince Siddhartha
सरक्ष्य = carefully
अति = that
त्रैव = meaning was kept
अदीषदेशी = with his sincerity
त्रै च च च = all by the Gods
कृतबुद्धिमौहः = having been recovered his wisdom

Meaning :- When the chariot driver was asked by the prince Siddhartha, he explained every thing about the old age, with all his sincerity. Due to the Gods the wisdom of the prince was covered with innocence.

५] रूपर्थ्य हन्ती व्यसनं बलर्थ्य शोकर्थ्य योनिनिधनं रत्नानाम् ।
नाशः स्मृतीनां रिपुरिद्वियागमेषा जरानाम् यर्थम् भवनः ।

प्रतिपदार्थः :-

रूपर्थ्य = of beauty

हन्ती = destroyer

व्यसनं = causes for the grief

बलर्थ्य = of strength

शोकर्थ्य = of the sadness

योनि = the cause

निधनं = without having

रत्नानां = any happiness

नाशः = destroy

स्मृतीनां = memory

रिपुः = enemy

इद्विद्याणां = to the sense organs

इष्ट = this

जरा = old age

नाम = word

यर्था = due to this

H.S.H. = was broken down इष्ट = this man

Meaning :- It is called old age. That which has broken him down, the murderer of beauty, the sun of vigour, the birth place of sorrow, the grave of pleasure, the destroyer of memory, the enemy of senses. (vigour means strength)

६] पीतमनैनापि पयः शिशुते कालोऽ मूर्यः परिमत्तमुव्यभिः
कर्मण भूत्वा च युवा करुषान् कर्मण तेनैव जगमुपेतः ॥

प्रतिपदार्थः :- पीतं = drank

पी + अनैनापि = this man only

पयः = milk

शिशुते = in his child hood

कालोऽ = during his infant age

मूर्यः = (he) use to

परिमत्तं = crawl

उव्याः = on the floor

कर्मण = step by step

भूत्वा = after getting

त = and

युवा = young age

वपुष्मात् = will become an
young man

Mean
age, t
childh
youth
man.
७] इत्येव
विमेष र
प्रतिपदा

क्रमेत = slowly day by day
तेन+एत = he only
जरां = to old age
उपेतः = reached

Meaning:- He drank milk in his infant age, then he crawled on earth in his childhood. In course of time, he became youthful and finally he became an old man.

७] इत्येवमुक्ते चलितः सकिञ्चिद्वाजात्मनः सूतमिदं ब्रह्मार्थं।
विमेष दीर्घा भविता ममापीत्यस्मै ततः सारथिरभ्युवाच ॥

प्रतिपदाश्फः :- इति+कुरुं + उक्तं = saying thus spoke

चलितः = upset

सः = he

किञ्चित्किञ्चित् = for a while

राजात्मनः = that prince

सूतम् = to the chariot driver

इत् = thus

ब्रह्मार्थं = said

कि = why

कुरुः दीर्घः = this evil

भविता = in future

मम+अपि = to me also

इति+अस्मै = to the prince.

ततः = afterwards

सारथिः = the chariot driver

अपि+उवाच = gave the reply

Meaning: After listening the driver's words, the prince gets upset a little. Again the prince asked the driver, "Shall I get this evil in the future ?". The chariot driver replied in the positive manner

8] आयुष्मतीऽप्येष क्यः प्रकृष्टि निः संशयं कालवर्त्तेन भवति एव जर्ण रूपविनाशयिता जानाति वैष्णवति चैव लोकः ॥

Pronunciation:- आयुष्मतः = Oh ! prince

अप्येष = even to you

एषः = this

क्यः = age

प्रकृष्टिः = changes

निः संशयः = surely

कालवर्त्तेन = in course of time

भवति = will come

एव = all this

जरा = old age

रूपविनाशयिता = destroy the beauty

जानाति च = and this is known

एव = all

इच्छति = wish

च = and

एव = this

लोकः = all the people

Meaning:- In course of time you will also get all these changes of age. All the people know that the age will destroy the beauty and although we they wish this

१] ततः सपूर्वशय शुद्ध बुद्धि विस्तीर्णकल्पाचित्पुण्य कर्म,

शुत्वा जरां संविविज महात्मा महाशनेधीष मिवान्तिके गृहः॥

प्रतिपदार्थः:-

ततः = then

सः = the prince Siddhartha

पूर्वशयशुद्धबुद्धिः = who has pure mind
by his good deeds in the
past life

विस्तीर्णकल्पाचित्पुण्यकर्म = the good qualities obtained
since a long time

शुत्वा = after listening

जरां = about the old age

संविविज = married

महात्मा = the prince

महाशने = thunder bolt

धीष = sound

गृहः = like a

गृहोक्तुः = near by

गृहः = bull

Meaning:- Then the prince Siddhartha who had good qualities through his good deeds in his

Past life, worried about old age just like a bull which heard the sound of a thunder bolt.

10] निः श्वस्य दीप्तं स्व शिरः प्रकृत्या नस्मिंश्च जीवं
नां चैव दृष्ट्वा जनतां सहषरं वाक्यं स संविनो इदं जगाद्

प्रतिपदाशः:- निः श्वस्य = having a exhale

दीप्तं = long or deep

— = and

स्वशिरः = his head

प्रकृत्या = shaking

नस्मिन् = that old man

— = and

जीवं = who lost his strength

विनिवेश्य = keeping

यैषः = an eye

नां = that

य + एष = everything

दृष्ट्वा = observed

जनतां = people

सहषरं = who are happy

वाक्यं = this word

सः = that prince

संविनो = who with great grief

इदं = thus

जगाद् = said

Mean
shakin
on the
observe
said :-

11] चुवं
न चैव
प्रतिपदाशः

Meaning:- Taking a deep breath, and shaking his head, the prince kept an eye on the old man who lost his strength, and observed the happiness of the people, then said these words with all his sadness.

॥१॥ छुवं जरा हन्ति च निविशेषं स्मृतिं रूपं पराक्रमं च ।
न चैव संवेगमुपैति लोकः प्रत्यक्षतीडपीदृशमीक्षमाणः ॥

प्रतिपदार्थः:-

छुवं = thus

जरा = the old age

हन्ति = destroys

च = and

निविशेषं = without any

स्मृतिं = memory

च = and

रूपं च = beauty also

पराक्रमं = strength

च = and

न = not

च + छुवं = and everything

संवेगं = grief

उपैति = getting

लोकः = people in this world

प्रत्यक्षतः = clearly

अपि = also

ईदृशं = reality

ईक्षमाणः = though they are seeing

Meaning:- Old age destroys the beauty, strength and memory of a man people in this world are watching this clearly but they are not getting any fear

१२] अथापरं व्याधिपरीतदेहं त च व देवाः ससृजुभन्ज्यम्, दृष्टवा च तं सारथिमाबभाष्य शोऽहौदनिस्त्रात दृष्टिर्व ॥

प्रतिपदार्थः :-

अथ = after

अपरं = another

व्याधिपरीत देहं = diseased body

त + च व = that

देवाः = Gods only

सुसृजुः = created

मनुष्यः = man

दृष्टवा = after seeing

त = and, त = that

सारथिः = to the chariot driver

आबभाष्य = told,

शोऽहौदनिस्त्रात = son of Suddhodhana

तत् + गतदृष्टिः = having a steady look

इति = thus

Meaning:- Then the Gods created another person whose body effected by the disease. After seeing that person, the son of Suddhodhana said thus to the chariot driver.

प्रतिपदा-

१] पुरं

जीर्ण

प्रतिपदाश

पुरंतु त

स्वमिद्दि

प्रदृष्टं

शुद्धधिव

समवै

देव

निभ

उत्ता

प्रेर

संयो

किमि

Meaning

heaven,

man to

२] ततः कु

उत्ताप्ति

बृद्धस्य वैराग्योदयः

प्रतिपदार्थ तात्पर्यः :-

१] पुरं तु नत्स्वगमिव प्रदृष्टं शुद्धधीवासः समवेद्य देवाः ।

जीर्णं नरं निर्मिति प्रयातु संसारार्थ क्षितिपात्मजस्य ॥

प्रतिपदार्थः :-

पुरं तत् = finding that city

स्वर्मिल = as a heaven

प्रदृष्टं = siddhartha who is happy

शुद्धधीवासः = the gods in the heaven

समवेद्य = have observed

देवाः = those gods

निर्मिति = created

जीर्णं नरं = one old man

प्रयातु = to leave the home

संसारार्थ = have observed in order to inspire

क्षितिपात्मजस्य = of the prince mind

Meaning :- When Siddhartha finding the city as a heaven, the Gods of the heaven created an old man to inspire Siddhartha to leave home

२] ततः कुमारी जरथाभिभूतं दृष्ट्वा नरेण्यः प्रथगाकुतिं तम् ।

उवाच सङ्ग्राहकमागतस्थस्तत्त्वं निष्कम्पनिविष्ट्वृष्टिः ॥

प्रतिपदाश्फः :

ततः = then

कुमारः = the prince Siddhartha

जरयाभिभूतः = who is old

दृष्टवा = having seen

नरैश्चः = from normal persons

पृथक् आकृतिः = different in form

तं = that old man

उवाच = addressed or asked

संग्राहकम् = to the chariot driver

आगतार्थः = with an interest to know

तत्त्वं = on that old man only

निष्कंप निविष्ट दृष्टिः = with a concentrated look.
Meaning : Then the prince Siddhartha with a steady look, have seen the old man and wanted to know about him, he asked the chariot driver thus

3] क एष भीः सूत नरैश्चयुपैतः केऽस्मि सिर्विष्टिविष्टतः
भूस्यवृताक्षः शिथिलानताङ् किं विक्षेवा प्रकृतिश्वृच्छा॥

कः = who is?

एषः = this

भीः = oh

सूत = chariot driver

नरः = man

अयुपत् = coming this side

केशः = with the hair

सीतः = grey

यदिविष्टादृष्टः = holding a stick in his hand

भूमवृत्तादः = eyes are closing with eyebrows

शिथिला नाताङ् = parts of the body are bent

किं = why

विक्रिया उषः = this defect

प्रकृतिः = is it by nature

यदृष्टिः = is it a sudden change

Meaning! - Oh! Driver! the coming man is what type? His hair is grey. He is holding stick in his hands. The eyes are closing by the eye brows. Body is bent. What type of problem he had? Is it is by nature or is it a sudden change?

4] इत्येवमुक्तः स रथप्रणीता निवेदयामास नृपात्मजाग्र,
सरक्ष्यमत्यथगदीषदेश त्वं च देवैः कृतबुद्धिमौहः ॥

प्रतिपदार्थः :

इति च च = thus

उक्तः = was asked

सः = he

नृपात्मजाग्र = to that you

रथप्रणीता = the driver of the chariot

निवेदयामास = explained

नृपात्मजाग्र = to that prince Siddhartha

सरक्ष्य = carefully

आपि = that

अतः = meaning was kept

अतोवदश्च = with his sincerity

अतः च = all by the

देवैः = Gods

कृतबुद्धिमौहः = having been covered his wisdom

Meaning :- When the chariot driver was asked by the Prince Siddhartha, he explained every thing about the old age, with all his sincerity. Due to the Gods the wisdom of the Prince was covered with innocence.

5] सर्व

नाशः स्म

प्रतिपदा

हृष

ल्ल

बो

२७०

ये

निष

रा

ना

समू

रिय

इत्य

कुषा

भर्त

नाम

यर

प्रध

भ्रम

Mean

has w

the su

the g

the en

५] सुपर्य हन्ति व्यसनं बलस्य शोकस्य योनिनिधनं रत्नीनाम्।
मात्रः स्मृतीनां इपुरिन्द्रियाणामेषा जरानाम् यर्थेष भवनः॥

प्रतिपदातः :- सुपर्य = of beauty

हन्ति = destroyer

व्यसनं = causes for the grief

बलस्य = of strength

शोकस्य = of the sadness

योनि = the cause

निधनं = without having

रत्नीति = any happiness

नाशः = destroy

स्मृतीति = memory

रिपुः = enemy

इपुरिन्द्रियाणा = to the sense organs

जरा = this

जरा = old age

नाम = word

यथा = due to this

प्रथा = this man

भ्रष्टः = was broken down

Meaning:- It is called old age. That which has broken him down, the murderer of beauty, the ruin of vigour, the birth place of sorrow, the grave of pleasure, the destroyer of memory, the enemy of senses (vigorous vigour means strength)

६] पीनं ब्रह्मनामि पयः शिशुत्वे कालेन भूयः परिसप्तमुव्याग्
क्रमेण भूत्वा च युवा वपुष्मान् क्रमेण तेनैव जरामुपलः

प्रतिपदार्थः :- पीतं = drank

हि + अनेन अपि = this man only

पयः = milk

शिशुत्वे = in his childhood

कालेन = during his infant age

भूयः = * (he) use to

परिसृप्तं = crawl

उत्थ = on the floor

क्रमेण = step by step

मुत्त = after getting. , एत = and

युवा = young age

वपुष्मान् = will become an young man

क्रमेण = slowly day by day

तेन + उत्थ = he only

उत्थ = to old age

उपतः = reached

Meaning:- He drank milk in his infant age, then he crawled on earth in his childhood. In course of time, he became youthful and finally he became an old man.

इति विमोष प्रतिपदा चलित इति सूतम् इति बभाष किं किं च च भविता मम + इति + च ततः = सारांशः अथि + च Mean prince the don chariot

पृथिव्येन मुक्ते चलितः स किञ्चिद्ग्राजात्मजः सूतमिदं बभाष ।
विमिष दीषो भविता ममापीत्यस्मै ततः सारथिरभ्युवाच ॥

प्रतिपदार्थः :- इति + पुंक + उक्त = saying thus spoke

चलितः = upset

हृत सः = he

किञ्चित् = for a while

राजात्मजः = that prince

सूतम् = to the chariot driver

इदं = thus

बभाष = said

किं = why

दीषः दीषः = this evil

भविता = in future

मम + अपि = to me also

इति + अस्मै = to the prince

ततः = afterwards

सारथः = the chariot driver

अभि + उवाच = gave the reply

Meaning :- After listening the driver's words, the prince gets upset a little. Again the prince asked the driver, "Shall I get this evil in the future?" The chariot driver replied in the positive manner.

४] आयुष्मतीऽव्येष वयः प्रकर्षि निः संशयं कालवर्णनं भावि,

उवं जरं रूप विनाशयिति जानाति वैच्छति चैव लोकः ॥

प्रतिपदाश्च :- आयुष्मतः = Oh! Prince

अपि = even to you

एषः = this

वयः = age

प्रकर्षः = changes

निः संशयः = surely

कालवर्णनः = in course of time

भावि = will come

उवं = all this

जरा = old age

रूपविनाशयिति = destroy the beauty

ज्ञानाति = it = and this is known thing

स्त्रैः = all

इच्छति = wish

त = and

स्त्रैः = this

लोकः = all the people

Meaning :- In course to time you will also get all these changes of age. All the people know that the age will destroy the beauty and although they wish this.

१] ततः सपूर्वशिय शुद्ध बुद्धि विस्तीर्णकल्पाचित्पुण्य कर्म,

मूला जरां सविविजे महात्मा महाशनेधीष मिवान्तिके गौः ॥

पूर्तिप्रदातः :- ततः = then

सः = the prince Siddhartha

सपूर्वशिगशुद्धबुद्धि = who has pure mind by his good deed
in the past life

विस्तीर्णकल्पाचित् = पुण्यकर्म = the good qualities obtained
since a long time

श्रूत = after listening

जरां = about the old age

सविविजे = worried

महात्मा = the prince

महाशने = thunder bolt

धीषं = sound

इत = like a

आन्तिके = near by

गौः = bull

Meaning :- Then the prince Siddhartha who had
good qualities through his good deeds in his past
life, worried about the old age just like a bull
which heard the sound of a thunder bolt

10] निः श्वस्य दीर्घ स्व शिरः प्रकम्प तस्मिंश्च जीर्ण

तां चैव दृष्ट्वा जनतां सहष्रं वाक्यं स संविरम इदं जगाद्

प्रतिपदार्थः :- निः श्वस्य = having a exhale

दीर्घ = long or deep

स्वशिरः = his head

प्रकम्प = shaking

तस्मिन् = that old man

च = and

जीर्ण = who lost his strength

विनिरेष्य = keeping

योऽपि: = an eye

तां = that

स्व + तुष्टव = everything

वाक्यं = this दृष्ट्वा = observed

जनतां = people

सहष्रं = who are happy

वाक्यं = this word

स्त्रः = that prince

संविरमः = with great grief

इदं = thus, जगाद् = said

Meaning :- Taking a deep breath, and shaking his head, the prince kept an eye on the old man who lost his strength, and observed the happiness of the people, then said these words with all his sadness.

11] 5

न

प्रतिप

नि

स्व

स्व

परा

स्व

स्व

उपि

लीक

प्रत्यक्षत

आपि

ईदुश्च

ईदामात्

Meanin

and me

watchin

any fe

॥५॥ जरा हन्ति च निविशेषं स्मृतिं रूपं च पराक्रमं च।
न चैव ग्रंवेगमुपैति लोकः प्रत्यक्षतोऽपीदृशमीक्षमाण॥

प्रतिपदार्थः :- एवं = thus

जरा = the old age

हन्ति = destroys

च = and

निविशेषं = without any

स्मृतिं = memory

च = and

रूपं च = beauty also

पराक्रमं = strength

च = and, न = not

च + एवं = and everything

ग्रंवेगं = grief

उपैति = getting

लोकः = people in this world

प्रत्यक्षतः = clearly

आपि = also

ईदृशं = reality

ईदृशाणः though they are seeing

Meaning:- Old age destroys the beauty, strength and memory of a man people in this world are watching this clearly but they are not getting any fear.

४२] अथापरं व्याधिपश्चितदेहं त पुरव देवाः सस्तजुमनुष्यम् ।
दृष्टवा च तं सारथिमाबभाष्य शोद्धोदनिस्तद्वात दृष्टिरेव ॥

प्रतिपदार्थः :- अथ = after

अपरं = another

व्याधिपश्चित देहं = diseased body

ते + देव = that

देवाः = Gods only

सुस्तुः = created

मनुष्यं = man

दृष्टवा = after seeing

य = and

ते = that

सारथिं = to the chariot driver

आबभाष्य = told

शोद्धोदनि = son of Suddhodhana

तत् + गतदृष्टिः = having a steady look

इति = thus

Meaning :- Then the Gods created another person whose body effected by the disease. After seeing that person, the son of Suddhodhana said thus to the chariot driver

धातृपाठी धातृवः

i) भू- स्तायाम् (to become, to be)

i) लृत् (present tense)

| | | | |
|--------|------------|-----------|-----------|
| पुरुषः | पुक्तव्यनं | द्विव्यनं | बहुव्यनम् |
|--------|------------|-----------|-----------|

| | | | |
|-------------|------|------|--------|
| प्रथमपुरुषः | भवति | भवतः | भवन्ति |
|-------------|------|------|--------|

| | | | |
|-------------|------|------|-----|
| मध्यमपुरुषः | भवसि | भवयः | भवथ |
|-------------|------|------|-----|

| | | | |
|-------------|-------|-------|-------|
| उत्तमपुरुषः | भवामि | भवावः | भवामः |
|-------------|-------|-------|-------|

ii) लृत् (Past tense)

| | | | |
|--------|------------|-----------|-----------|
| पुरुषः | पुक्तव्यनं | द्विव्यनं | बहुव्यनम् |
|--------|------------|-----------|-----------|

| | | | |
|-------------|-------|---------|-------|
| प्रथमपुरुषः | अभवत् | अभवताम् | अभवन् |
|-------------|-------|---------|-------|

| | | | |
|-------------|------|--------|------|
| मध्यमपुरुषः | अभवः | अभवतम् | अभवत |
|-------------|------|--------|------|

| | | | |
|-------------|-------|--------|--------|
| उत्तमपुरुषः | अभवम् | अभवावः | अभवामः |
|-------------|-------|--------|--------|

iii) लृत् (Future tense)

| | | | |
|--------|------------|-----------|----------|
| पुरुषः | पुक्तव्यनं | द्विव्यनं | बहुव्यनं |
|--------|------------|-----------|----------|

| | | | |
|-------------|----------|----------|------------|
| प्रथमपुरुषः | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति |
|-------------|----------|----------|------------|

| | | | |
|-------------|----------|----------|---------|
| मध्यमपुरुषः | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ |
|-------------|----------|----------|---------|

| | | | |
|-------------|-----------|-----------|-----------|
| उत्तमपुरुषः | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः |
|-------------|-----------|-----------|-----------|

iv) नीट् (Imperative mood)

| | | | |
|--------|------------|-----------|----------|
| पुरुषः | पुक्तव्यनं | द्विव्यनं | बहुव्यनं |
|--------|------------|-----------|----------|

| | | | |
|-------------|--------------|--------|--------|
| प्रथमपुरुषः | भवतु, भवतात् | भवताम् | भवन्तु |
|-------------|--------------|--------|--------|

| | | | |
|-------------|------------|-------|-----|
| मध्यमपुरुषः | भव, भवतात् | भवतम् | भवत |
|-------------|------------|-------|-----|

| | | | |
|-------------|-------|-------|-------|
| उत्तमपुरुषः | भवानि | भवावः | भवामः |
|-------------|-------|-------|-------|

v) विधिलिङ् (Potential Mood)

| | | | |
|-------------|--------|---------|--------|
| प्रथमपुरुषः | भवेत् | भवेताम् | भवेयुः |
| मध्यमपुरुषः | भवेः | भवेतम् | भवेत् |
| उत्तमपुरुषः | भवेयम् | भवेत् | भवेतम् |

ii] गम्लू - गती (go)

i) लट् (present tense)

| | | | |
|-------------|--------|----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनं | द्विवचनं | बहुवचनं |
| प्रथमपुरुषः | गच्छति | गच्छतः | गच्छन्ति |
| मध्यमपुरुषः | गच्छसि | गच्छथः | गच्छथ |
| उत्तमपुरुषः | गच्छमि | गच्छावः | गच्छामः |

ii) लट् (past tense)

| | | | |
|-------------|---------|-----------|---------|
| प्रथमपुरुषः | अगच्छत् | अगच्छताम् | अगच्छन् |
| मध्यमपुरुषः | अगच्छः | अगच्छतम् | अगच्छत् |
| उत्तमपुरुषः | अगच्छम् | अगच्छाव | अगच्छाम |

iii) लूट् (Future tense)

| | | | |
|-------------|----------|-----------|------------|
| प्रथमपुरुषः | गमिष्यति | गमिष्यतः | गमिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | गमिष्यसि | गमिष्यथः | गमिष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | गमिष्यमि | गमिष्यावः | गमिष्यामः |

iv) लीट् (Imperative mood)

| | | | |
|-------------|------------------|----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | गच्छतु, गच्छतात् | गच्छताम् | गच्छन्तु |
| मध्यमपुरुषः | गच्छ, गच्छतात् | गच्छतम् | गच्छत |
| उत्तमपुरुषः | गच्छानि | गच्छाव | गच्छाम |

v) विधिलिङ्
प्रथमपुरुष
मध्यपुरुष
उत्तमपुरुष

5] दृश्या-

i) लट् (पुरुष
प्रथमपुरुष
मध्यमपुरुष
उत्तमपुरुष)

ii) लट् (प्रथमपुरुष
मध्यमपुरुष
उत्तमपुरुष)

iii) लूट् (प्रथमपुरुष
मध्यमपुरुष
उत्तमपुरुष)

iv) लीट् (प्रथमपुरुष
मध्यमपुरुष
उत्तमपुरुष)

v) विधिलिङ्
प्रथमपुरुष
मध्यपुरुष
उत्तमपुरुष

विधिलिङ्गः (Potential mood)-

| | | | |
|-------------|----------|---------|----------|
| प्रथमपुरुषः | गच्छत् | गच्छतां | गच्छेयुः |
| मध्यमपुरुषः | गच्छते | गच्छतं | गच्छेत |
| उत्तमपुरुषः | गच्छेयम् | गच्छेव | गच्छेम |

दृश्यिर् एवेक्षणं (to see, to look)

i) नहै (present tense)

| | | | |
|-------------|------------|----------|----------|
| पुरुष | पुक्तव्यनं | द्विवचनं | बहुवचनं |
| प्रथमपुरुषः | पश्यति | पश्यतः | पश्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | पश्यसि | पश्यथः | पश्यथ |
| उत्तमपुरुषः | पश्यामि | पश्यावः | पश्यामः |

ii) लाइ (past tense)

| | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | अपश्यत् | अपश्यताम् | अपश्यन् |
| मध्यमपुरुषः | अपश्यः | अपश्यतं | अपश्यन्त |
| उत्तमपुरुषः | अपश्यम् | अपश्यावः | अपश्यामः |

iii) लाट् (future tense)

| | | | |
|-------------|-----------|-----------|------------|
| प्रथमपुरुषः | द्रष्यति | द्रष्यतः | द्रष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | द्रष्यसि | द्रष्यथः | द्रष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | द्रष्यामि | द्रष्यावः | द्रष्यामः |

iv) लाई (imperative mood)

| | | | |
|-------------|------------------|----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | पश्यतु, पश्यतात् | पश्येतां | पश्यन्तु |
| मध्यमपुरुषः | पश्य, पश्यतात् | पश्यतः | पश्यत |
| उत्तमपुरुषः | पश्यानि | पश्यावः | पश्यामः |

v) विधिलिङ्गः (Potential mood)

| | | | |
|------------|----------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुष | पश्येत् | पश्येताम् | पश्येयुः |
| मध्यपुरुष | पश्ये | पश्येतं | पश्येत |
| उत्तमपुरुष | पश्येयम् | पश्येव | पश्येम |

4] असू भुवि - (to be)

i) लहू (Present Tense):-

| | | | |
|-------------|-------|-------|-------|
| पुरुषः | इव | द्विव | ब्रव |
| प्रथमपुरुषः | अस्ति | स्तः | सन्ति |
| मध्यमपुरुषः | अस्ति | स्थः | स्थ |
| उत्तमपुरुषः | अस्मि | स्वः | स्मः |

ii) लड़ (Past Tense):-

| | | | |
|-------------|-------|---------|------|
| प्रथमपुरुषः | आसीत् | आस्ताम् | आसन् |
| मध्यमपुरुषः | आसीः | आस्तम् | आस्त |
| उत्तमपुरुषः | आस्म | आस्न | आस्म |

iii) लृट (Future Tense):-

| | | | |
|-------------|-----------|-----------|------------|
| प्रथमपुरुषः | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः |

iv) लोट (Imperative Mood):-

| | | | |
|-------------|---------------|-------|-------|
| प्रथमपुरुषः | अस्तु, स्तातु | स्तां | सन्तु |
| मध्यमपुरुषः | एषि, स्तात् | स्तं | स्त |
| उत्तमपुरुषः | असानि | असाव | असाम |

v) विधिलिङ् (Potential Mood):-

| | | | |
|-------------|--------|---------|--------|
| प्रथमपुरुषः | स्यात् | स्यातां | स्युः |
| मध्यमपुरुषः | स्याः | स्यातं | स्यात् |
| उत्तमपुरुषः | स्याम् | स्याव | स्याम |

५) इच्छा - इच्छायाम् (to desire)

i) लद् (Present tense):-

| | | | |
|-------------|---------|---------|----------|
| पुरुषः | पु.व | द्वि.व | ब.व |
| प्रथमपुरुषः | इच्छति | इच्छतः | इच्छन्ति |
| मध्यमपुरुषः | इच्छते | इच्छयः | इच्छन्थ |
| उत्तमपुरुषः | इच्छामि | इच्छावः | इच्छामः |

ii) लड् (Past tense):-

| | | | |
|-------------|---------|-----------|---------|
| प्रथमपुरुषः | पुच्छत् | पुच्छताम् | पुच्छन् |
| मध्यमपुरुषः | पुच्छतः | पुच्छतम् | पुच्छत |
| उत्तमपुरुषः | पुच्छम् | पुच्छाव | पुच्छाम |

iii) लृह् (Future tense):-

| | | | |
|-------------|------------|------------|-------------|
| प्रथमपुरुषः | पुषिष्यति | पुषिष्यतः | पुषिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | पुषिष्यसि | पुषिष्यथः | पुषिष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | पुषिष्यामि | पुषिष्यावः | पुषिष्यामः |

iv) लीह् (Imperative mood):-

| | | | |
|-------------|---------|----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | इच्छतु | इच्छताम् | इच्छन्तु |
| मध्यमपुरुषः | इच्छ | इच्छतम् | इच्छत |
| उत्तमपुरुषः | इच्छानि | इच्छाव | इच्छाम |

v) विच्छिलिह् (Potential mood):-

| | | | |
|-------------|----------|------------|---------|
| प्रथमपुरुषः | इच्छेत् | इच्छेताम् | इच्छेयः |
| मध्यमपुरुषः | इच्छः | इच्छेतम् | इच्छेत |
| उत्तमपुरुषः | इच्छेयम् | इच्छेत्वम् | इच्छेम |

६] लिखु अक्षरविन्यासे - (to write)

पुः i) लट (Present tense):-

| | | | |
|-------------|--------|--------|---------|
| पुरुषः | पु. व | दि. व | ब. व |
| प्रथमपुरुषः | लिखति | लिखतः | लिखन्ति |
| मध्यमपुरुषः | लिखसि | लिखयः | लिखय |
| उत्तमपुरुषः | लिखामि | लिखावः | लिखामः |

ii) लइ (Past tense):-

| | | | |
|-------------|--------|----------|--------|
| प्रथमपुरुषः | अलिखत् | अलिखताम् | अलिखन् |
| मध्यमपुरुषः | अलिखः | अलिखतम् | अलिखत |
| उत्तमपुरुषः | अलिखम् | अलिखाव | अलिखाम |

iii) लूह (Future tense):-

| | | | |
|-------------|------------|------------|-------------|
| प्रथमपुरुषः | लैखिष्यति | लैखिष्यत् | लैखिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | लैखिष्यसि | लैखिष्ययः | लैखिष्यय |
| उत्तमपुरुषः | लैखिष्यामि | लैखिष्यावः | लैखिष्यामः |

iv) लोह (Imperative mood):-

| | | | |
|-------------|--------|---------|---------|
| प्रथमपुरुषः | लिखतु | लिखताम् | लिखन्तु |
| मध्यमपुरुषः | लिख | लिखतम् | लिखत |
| उत्तमपुरुषः | लिखानि | लिखाव | लिखाम |

v) विधिलिङ् (Potential mood):-

| | | | |
|-------------|---------|----------|--------|
| प्रथमपुरुषः | लिखेत् | लिखेताम् | लिखेतु |
| मध्यमपुरुषः | लिखै | लिखेतम् | लिखेत |
| उत्तमपुरुषः | लिखेयम् | लिखेवम् | लिखेम |

इ^१ कृ ए - करणी (to be) (कृ)

i) लंद (Present Tense):-

| | | | |
|-------------|--------|---------|-----------|
| पुरुषः | ए. व | द्वि. व | बृ. व |
| प्रथमपुरुषः | कर्ति | कुरतः | कुर्वन्ति |
| मध्यमपुरुषः | कर्ति | कुरुथः | कुरुथ |
| उत्तमपुरुषः | कर्तमि | कुर्वः | कुर्मः |

ii) लंड (Past Tense):-

| | | | |
|-------------|---------|-----------|------------|
| प्रथमपुरुषः | अकर्तृ | अकुराताम् | अकुर्वन्तु |
| मध्यमपुरुषः | अकर्ता: | अकुरुत्म् | अकुर्स |
| उत्तमपुरुषः | अकरवम् | अकुर्व | अकुर्म |

iii) लूट (Future Tense):-

| | | | |
|-------------|-----------|-----------|------------|
| प्रथमपुरुषः | करिष्यति | करिष्यतः | करिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | करिष्यसि | करिष्यथः | करिष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | करिष्यामि | करिष्यावः | करिष्यामः |

iv) लौट (Imperative Mood):-

| | | | |
|-------------|-------|---------|-----------|
| प्रथमपुरुषः | करोतु | कुरताम् | कुर्वन्तु |
| मध्यमपुरुषः | कुरु | कुरत्म् | कुरेत |
| उत्तमपुरुषः | करवाओ | करवाक | करवाम |

v) विद्यिलिङ् (Potential Mood):-

| | | | |
|-------------|-------|---------|-------|
| प्रथमपुरुषः | कुयति | कुयतिम् | कुयुः |
| मध्यमपुरुषः | कुयतः | कुयतिम् | कुयति |
| उत्तमपुरुषः | कुयमि | कुयवि | कुयाम |

8] चुरू - स्तैये (to steal):-

i) लट्ट (Present Tense):-

| | | | |
|-------------|---------|---------|----------|
| पुरुषः | पु.व | द्वि.व | बु.व |
| प्रथमपुरुषः | चौरयति | चौरयतः | चौरयन्ति |
| मध्यमपुरुषः | चौरयसि | चौरयथः | चौरयथ |
| उत्तमपुरुषः | चौरयामि | चौरयावः | चौरयामः |

ii) लट्ट (Past Tense):-

| | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | अचौरयत् | अचौरयताम् | अचौरयन् |
| मध्यमपुरुषः | अचौरयः | अचौरयतम् | अचौरयसा |
| उत्तमपुरुषः | अचौरयम् | अचौरयावः | अचौरयामः |

iii) लट्ट (Future Tense):-

| | | | |
|-------------|-------------|-------------|--------------|
| प्रथमपुरुषः | चौरयिष्यति | चौरयिष्यतः | चौरयिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | चौरयिष्यसि | चौरयिष्यथः | चौरयिष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | चौरयिष्यामि | चौरयिष्यावः | चौरयिष्यामः |

iv) लौट्ट (Imperative mood):-

| | | | |
|-------------|---------|----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | चौरयनु | चौरयताम् | चौरयन्तु |
| मध्यमपुरुषः | चौरय | चौरयतम् | चौरयत |
| उत्तमपुरुषः | चौरयानि | चौरयावः | चौरयामः |

v) विधिलिङ्ग (Potential mood):-

| | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | चौरयेत् | चौरयेताम् | चौरयेयुः |
| मध्यमपुरुषः | चौरये: | चौरयेतम् | चौरयेत |
| उत्तमपुरुषः | चौरयेयं | चौरयेव | चौरयेम |

सन्दभः

गुवा

परिचयः

the less

Ashwag

' Bhudh

सन्दभः :-

pleasure

his won

walking

He enq

him tha

became

old ag

taking

अशः :-

thus d

to do ..

2] महाराज

परिचयः :-

the less

Ashwago

' Bhudh

बुद्धस्य च कैराग्योदयः

प्र० ५: :-

१] दुष्ट जरा नाम यथेष भवतः ?

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'बुद्धस्य कैराग्योदयः' It is written by Ashwagosha. which extracted from his work 'Bhuddhasya Charitam'.

संदृष्टि :- Prince Siddhartha went on a visit to pleasure garden alone with his chariot. On his way he was I will see an old man walking with stick and bending forward. He enquired about him. The chariot told him that every man who is born shall became old I and this man due to his old age unable to do any work he is taking the help of a stick to walk

उत्तरः :- The charactor spoke to siddhartha thus due the old age only he is unable to do any work

२] महारानीदीपमिवाविके गतः ?

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'बुद्धस्य कैराग्योदयः' It is written by Ashwagosha. which extracted from his work 'Bhuddhasya Charitam'

स्वेच्छा :- Listening to the chariot Siddhartha was shocked since he has never seen any suffering like old age.

उत्तर :- Siddhartha having heard to the words of chariot was terrified like a bull which heard the sound of thunder bolt.

3] न देव सर्वगमुपौष्टि लोकः प्रद्युष्टीप्रदृशमिष्टः
परिचय :- The above sentence is taken from the lesson 'बुद्धस्य वेराम्यादयः'. It is written by Ashwagosha which extracted from his work Buddhasya Charitam.

स्वेच्छा :- Listening to the chariot Siddhartha feel very was shocked since he has never seen any suffering like old age.

उत्तर :- Having heard above the old age Siddhartha feel very unhappy and spoke thus the people who are aware of all suffering like old age but still as not getting any fear.

4] अत्कृति देवो लोकोऽनुभवः ?

परिचय :- The above sentence is taken from the lesson 'बुद्धस्य वेराम्यादयः'. It is written by Ashwagosha which is extracted from his work Buddhasya Charitam.

स्वेच्छा :-
to please
On his
see a
about
उत्तर :-
regarding
disease
and many
many more

5] बुद्धानुभवः
परिचय :-

the less
A shiva
work

स्वेच्छा :-
Siddhartha
chariot
trouble
also. The
the disea
the worl
they will
उत्तर :- The
diseases

Ques. 2:- Prince Siddhartha went on a visit to pleasure garden along with his chariot. On his way he will see two times he will see a diseased & diseased person and enquires about him.

Ans. :- The chariot spoke thus to Siddhartha regarding the diseased person thus, a disease is a calamity which strikes a man and makes him incapable of doing any work.

5] कृष्णरुपे दृष्टिरुपे ऋषि ?

Ans. :- The above sentence is taken from the lesson 'कृष्ण वराहालयः' It is written by Ashvagosha which extracted from his work Bhuddhasya Charitam.

Ques. 3:- After seeing the person with diseases Siddhartha feel very bad and spoke to chariot dear thus, Is this sickness give trouble to only this man or other people also. The chariot spoke thus Oh prince the diseases will make all the people in the world suffer though they are suffering they will search for pleasure only.

Ans. :- The chariot spoke thus Oh prince the diseases will make all the people in the

world suffer though they are suffering
they will search for pleasure only

6] विस्तीर्णमज्ञानमहो नराणि हुसन्ति ये
रोगभर्यैरमुत्तः ?

परिचय :- The above sentence is taken from the lesson 'बुद्धस्य विरागोदयः'. It is written by Ashwagosha which extracted from his work Bhuddhanya chariato.

टोक्टि :- After seeing the person with diseases Siddhartha feel very bad and spoke to chariato dear thus is this sickness give trouble to only this man of other people also. The chariato spoke thus Oh prince the diseases will make all the people in the world though they are suffering they will search for pleasure only

3टॅफ्ट :- Siddhartha spoke thus to the chariato people in the world live happily even though they are facing troubles in the form of diseases Oh! how great is their ignorance

7] सुन
परिचय
the l
Ashwa
Bhundo
Mod 2f:
moving
they n
four p
see t
AT2f:
seen on
which
8] विचार
परिचय
lesson
Ashwag
Bhuddo
टोक्टि:
moving
dead
stretch
goods
no-bod

७] शति कुमारश्च ददृष्ट नामः ?

क्रिया: :- The above sentence is taken from the lesson 'जहस्य वराणीदयः'. It is written by Ashwaghosha which extracted from his work Shuddhanya Charitam.

प्रश्नः :- The prince along with the charioteer moving forward in the garden. A dead man they will encounter carried on a stretcher by four people this charioteer no body else can see them

उत्तरः :- A dead person carried by some people are seen only by the prince and the charioteer which was created by gods

८] प्रियप्रियश्चस्त्यव्यत् तु नामः ?

परिचयः :- The above sentence is taken from the lesson 'जहस्य वराणीदयः'. It is written by Ashwaghosha which is extracted from his work Shuddhanya Charitam.

क्रिया: :- The prince along with the charioteer moving forward in the pleasure garden. A dead man they will encounter carried on a stretcher by four people this was created by gods except Siddhartha and charioteer no-body else can see them.

372f: - The chariotor spoke to Siddhartha thus, the person having born and nourished will ultimately die he will leave all his loving people and relatives have abandoned his mortal body.

9] सर्वस्य अन्ते नियति त्रैष्टः ?

पूर्वार्थः :- The above sentence is taken from the lesson 'सर्वस्य अन्ते नियति त्रैष्टः' It is written by Ashwagosha which is extracted from his work Buddhasya Charitam

373f: - The prince along with the chariotor moving forward in the pleasure garden. A dead man they will encoutn carried & on a stretcher by four people this was created by gods except Siddhartha and chariotor nobody else can see them

374f: - The chariotor spoke to Siddhartha thus "death occur to all who are born in this world the one who take birth is sure to die"

१० ज्ञानविनाशी

कथमाति काले सचेतनः स्थादिह इ

परिचयः :- The above sentence is taken from the प्रभासः ?
lesson 'शुद्धस्य वैराग्योदयः' It is written by
Aśvaghoṣa which is extracted from his work
Shuddhasya Charitam.

संदर्भः :- The prince along with the chariotor
moving forward in the pleasure garden. A
deadman they will encoutn caried on a stretcher
by four people this was created by god's
except siddhartha and chariotor nobody else
can see them. Seeing the pain and the sorrow
of the dead man siddhartha was deeply moved.

उत्तरः :- Siddhartha Spoke to the chariotor thus,
"These people having known the sorrow and the
pain of disease and death are very happy. How
can they be happy admist of all those
problems."

बुद्धरथ
Buddharath

Essay:

The lesson 'बुद्धरथ कृतिकाण्डः' is extracted from 'Buddhaya charitam' written by Ashwagosha. It is from 3rd sargas named 'Samregot Pathiki' visit to city.

Siddhartha was only child of kind king suddenly Suddhodhana and was living happily in luxurious palace built by his father without any difficulty or sorrow once he wanted to have a visit to pleasure garden outside the city. King Suddhodana made arrangements for his visit to the garden in such a way that there was no situations or things which could turn Siddharta's mind towards renunciation. The first plan of gods

The Gods who wanted to make Siddhartha to realise about life and turn towards renunciation. They created an old man in order to arise the feeling of indifference in Siddhartha on seeing him. He enquired the charioteer as to who was

with white hair and who bended forward holding stick. The chariotor having influence of Gods describes the old man thus it is the destroyer of beauty, weakening of strength, source of sorrow, loss of memory.

पति जरु नित्य यज्ञो गतः ।

He also reminded that Siddhartha also would become old. The prince who had acquired knowledge and met in past births sighed deeply and questioned why people were not panicked even after seeing the effect of old age.

The sick person they both proceed for the only to have encounter with the sick person. Then prince enquired thus, who is this person who had pretension belly pale complexion, dropping shoulders and was dying pitiously. The chariot said that this was sickness that made even a strong person dependent and it was common to all people. The prince was surprised that the people were happy even though they suffered illness.

पति जरु नित्य यज्ञो गतः ।

The dead man! Later gods created dead man on seeing him the prince enquired about dead man why he was being carried by the four persons and being followed by many sorrowful persons. The charioteer said that he was the only one who was devoid of his intellect qualities of senses and life.

He was compared to glade of grass and log. He said further that death was certain to all in material of lonely, middle or high class.

सत्य ओंक नियति विनाशः ।

The prince remarked that people were hard hearted as they tired without fear, even when death was common to all. He asked the charioteer to take him back to the Palace as how could one remained ignorant in times of distress.

गं गङ्गादत्तः पुनरैति कृपन्

संदर्भ वाक्यानि

1] शत्रुमुन्मूलयेत् प्राप्तः तीक्ष्ण तीक्ष्णं शत्रुणा।

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from the lesson "Na Ganga Datta Punareti Koopam". It is taken from Panchatantra written by "Vishnu Sharma".

Context- Ganga Datta, the king of frogs wanted to take revenge against his cousins, who harmed him. So, he thought to kill his cousins.

Meaning- A clever person should kill his enemy with the help of another powerful (Stronger) enemy.

2] गं अश्वद्वयमेतत् यत्तु आमां वहिना सह सङ्कमः।

Introduction- This sentence is taken from "Na Ganga Dattaha Punareti Koopam" abstracted from "Ladbha Pranaasa" (Loss of Gains) of "Panchatantra" written by "Vishnu Sharma".

Context- Gangadatta thinking of frogs, asked the snake Priyadrasina for friendship with him. Then the big snake told Gangadatta like this.

Meaning- The Cobra replied- "This is unbelievable may be ever there, grass blades have friendship with fire?" You are food and I am an eater.

3] अतिशर्तुं प्रणम्यापि रक्षत् प्राणान् दणानि च ।

Introduction:- This sentence is taken from "Na Ganga Dattaha Punareti Koopam" abstracted from "Ladbha Pranaasa" (Loss of Gains) of "Panchatantra" written by "Vishnu Sharma".

Content:- When the snake rejected the friendship with the frog, then Gangadatta told the snake like this.

Meaning:- It is said one should take help of enemy himself, even by requesting him, when one is totally devastated or self protection became impossible.

4] कठोरं यानहं तद दक्षिण्यामि तदुप गत्वा गत्वा ॥

Introduction:- This sentence is taken from "Na Ganga Dattaha Punareti Koopam" abstracted from "Ladbh Ladbha Pranaasa" (Loss of Gains) of "Panchatantra" written by "Vishnu Sharma".

Content:- The serpent accepted to go along with Gangadatta to kill his enemy cousins. Then Gangadatta told the serpent like this.

Meaning:- You have to eat only those frogs whom I show to you.

5] स

Intro

Ganga

from

"panc

Content

Gang

to go

did

one f

that

thoug

Mean

treat

one's

6] त

Intro

"Na

"Lad

written

Conte

Ganga

to go

not

5] सर्वनारो रमुत्पन्ने अत त्यजति पण्डितः ।

Introduction- This sentence is taken from "Na Ganga Dattaha Punareti Koopam" abstracted from "Ladbha Bravaasa" (Loss of Gains) of "Panchatantra" written by "Vishnu Sharma"

Context- The snake ate all the enemy frogs of Gangadatta. Then Gangadatta asked the snake to go to his place. But the snake denied and did not like to go and demanded him to give one frog daily for his food and threatened that he will eat all. Then Gangadatta thought to himself like this.

Meaning- The wise sacrifices a half when all is threatened and guards the other half to win one's ends. For total loss is hard.

6] न रमायते कृते भूते नाशयेन्मतिमानारः ।

Introduction- This sentence is taken from "Na Ganga Dattaha Punareti Koopam" abstracted from "Ladbha Bravaasa" (Loss of Gains) of "Panchatantra" written by "Vishnu Sharma"

Context- The snake ate all the enemy frogs of Gangadatta. Then Gangadatta asked the snake to go to his place. But the snake denied, did not like to go and demanded him to give one frog daily for his food and threatened that he will eat all. Then Gangadatta thought

himself like this

Meaning:- A wise man would not lose much good for little use. Wisdom implies much gain acquired with little pain.

7] ऋषि गृहस्त्री कालीन स्वरूपम् भूतं दिवान्
किं दिवि दिवि

Introduction:- This sentence is taken from "Na Ganga Dattaha Punareti Koopam" abstracted from "Ladbha Branaasa" (Loss of gains) of "Panchatantra" written by "Vishnu Sharma".

Context:- The wife of Gangadatta have seen "The distractive nature of the snake" and told like this to her husband frog.

Meaning:- Otherwise in the very short period all the frogs will be smashed.

8] शुभुक्षेत्रः फू ओ करीति पापत् ।

Introduction:- This sentence is taken from "Na Ganga Dattaha Punareti Koopam" abstracted from "Ladbha Branaasa" (Loss of gains) of "Panchatantra" written by "Vishnu Sharma".

Context:- The snake asked Iguana (or) Guana animal to bring Gangadatta into the well. Then Guana came to Gangadatta and said that Snake invites him to come into the well. Then Gangadatta told Guana like this

Meaning:- A hungry man does the sins. He is at nothing sticks. One starving of hunger, stoops down to any act.

न गङ्गादः योरति कृपम्

Essay:-

In certain well (in an agricultural land) there lived Ganga datta, the ruler of Kingdom of Frogs. Once he was insulted by the relatives and he could not bear the insult. He set out of the well, by one bucket of water lifting instrument. He said to himself. "One should avenge the two persons who troubled the one in suffering and one insults in trouble. The one who takes revenge, thus, shall not take birth again. Thinking so, he decided to put an end to all his people who caused insult.

Incidentally he saw a black cobra entering barrow (hole) of the soil. He decided to make use of the snake to kill the clan of frogs. He felt - "To achieve one's desire, an enemy should set against the enemy, a strong one against another stronger one. Thus both will die and all ends well."

A thorn creating pain in the body
Should be removed only with another
Sharper thorn. Like wise an enemy
responsible for the trouble should be
rooted out with the help of another
stronger one!"

"କୁରୁମୁଖୀରେ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ନେତ୍ର କୁରୁତି"

He moved onto the ant-hole and called out - "Oh dear friend Priyadarshana, please come out and make me feel happy!" The servant thought "who is the one yelling out? The voice is not of our race! Let me find out, without moving from my place!" He is neither my friend. That too, I have no friends in any other human community! Let me find out, without moving from my place!"

In fact, being without knowing the nature, place or race, one should not make friendship with any."

The cobra called out "Who are you?" The king of frogs replied "I am Ganga Datta, King of Frogs. I wish to make friendship

with you."

The Cobra replied "This is unbelievable! May be ever there, grass blades have friendship with fire!" अ-शृंखला मत्तु पर्तु उनानों वहिना सह

F.F.H: 1 "None shall move on to a killer himself by whom he will be killed!(We snakes eat away frogs. The how you want to be my friend)"

Gangadatta said "It is a fact, Both of us are enemies by birth. But I came to you, to get my enemies avenged, who insulted me! It is said one should take help of enemy himself, when one is totally devastated or self protection became impossible. Please help me to take revenge on my relatives".

The Cobra asked "where do you stay? Is it a natural groundlevel well, or a lake or pool?" The frog replied "It is a deepwell, constructed with bricks!"

Cobra replied "Oh! not (I am feetless). I have no feet. I can't enter the well. Also I can have no room to stay there. Being so, how can I attack your relatives there in the well?"

It is said by learned "Take the food, which you can relish, digest with no difficulty and feel satisfied. Thus you may be blessed with riches."

The frog replied "Don't worry! You do come over there. I will show you the way out. There is a hole in the wall of the well near water level. Confiding there, you can kill my kinsmen. (You may devour my people who insulted me)!"

The Cobra too had a second thought thus "I grew too old and can't move swiftly. With great difficulty, I get once in long time in a small mouse. Due to the frog, who intended to rid of his people, I am shown an easy way to get my daily food. Let me eat frogs. It is truly said that - may be one, a weakling and helpless, he should always cleverly choose a simple and easy mean of living!"

The chief of the frog, let the Cobra to the well, with the condition that, he

should eat only those enemies and opponents
on his clan. "कृष्ण यान्हे तव दशभिष्यामि त
एत हेतुर्यतः।" Soon Ganga Datta's rivals are
eaten by the Cobra. Then the Cobra said

" - "All those who insulted you are no more.
Now give me needed food daily, as you
brought me here, from my own place-

"Gangadatta thanked him and asked him to
go back q home! But the Cobra denied,
Saying that his place might be occupied by
some other one. So he demanded the frog to
arrange each day one frog for his food. He
also threatened to eat all at once, if his
demand is denied.

Then the frog realised the blunder. He
felt sad to bring into picture an enemy
stronger than himself. It was like eating
poison knowingly. The wise sacrifice a
half when all is threatened, and guards
the other half to win ones ends. Total
loss is hard. "एतोत्तरं फे फैलते।" A wise
man would not lose much good for little

use. Wisdom implies much gain acquired with little pain. "त इन्द्राणि तद ही
स्त्रियोऽप्यामृतः।" Let me act smart. Let us me accept his word and save the
comm community to some extent.". So daily one frog was given to the cobra. But deceiptfully the serpent killed more frogs.

Once, incidentally, Ganga Datta's son, Yamuna Datta was also eaten by the serpent. He lamented for no use. Even his wife poured abuses. She suggested to check for a mean to see the snake off.

By ill luck all frogs died, while only Ganga Datta was spared. Again Priyadarsana, the Snake demanded food. The chief of frog said - "Worry not! Allow me to go to other place. I'll see that, frogs in that place are brought here one by one, some how". Priyadarsana accepted and Ganga Datta went off the well swiftly. He prayed to all gods and never turned back. Priyadarsana waited if long for no use.

One day, Briyadarsana, sent out Iguana
in near by hole in the wall of the well,
whom he treated as friend. He also sent
a message to present himself, even if frogs
are not brought.

The messenger went and met Gangadatta
and deli delivered the request. Gangadatta
said "Please tell the snake that I never
come again. One starving of hunger, stoops
down to any act the fool man has his
heartless tricks I know. Bye- for evn."

"बुमुक्षितः किं न करीति पापं ।" ... न गंगदत्तः
पुनरैति कृपम् ।"

चित्रपटदर्शनिम्

प्रतिपदार्थ तात्पर्य

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे,
विन्देम देवतां वाचममृतामात्मनः कलाभूम्॥

प्रतिपदार्थः :-

इदं = This is,

कविभ्यः = For the poets

पूर्वेभ्यः = Olden

नमोवाकं = Namaskara

प्रशास्महे = Bowed before them, the reason is

विन्देम = Let we have

देवतां = to the goddess

वाचं = of speech

अमृतां = eternal

आत्मनः = of the creator

कला = that art

Mhd: :- To the ancient poets this is my salutation,
we bowed in front of the goddess of speech,
which is eternal and which in the art of
the creator.

२] किल्वनुष्ठाननियतं स्वातन्त्र्यमयकार्यति ।

संक्षेप ह्याहितानिनेना प्रत्यवाचेनुहृष्टता ॥

प्रतिपदार्थः :-

किल्वु इ = even though

अनुष्ठाननियतं = to perform the daily duties of
householders

स्वातन्त्र्यं

= their freedom

अपकर्त्ता

= will control

सकाटा

= obstruct

हि अाहितानिनो = indeed to the house holders
religious duties

प्रत्यवाचेनुहृष्टता

= with dispassionate

गृहस्थता

= duties of a house holder

महादः :- The religious performances obstructs the
house holder's freedom. Due to the urgency of
these religious observances, sita's father Janaka
has gone to Mithila city.

(१) ३] फैशवधरा भगवती भवतीभस्तुत

राजा प्रजापतिसमी जनकः पिता ते ।

ते प्रवृत्तवाशे नान्दिति । पाश्चिमाना
गृष्ण कुलश्च सविता च गुरुवर्गं च ॥

प्रतिपदार्थः :-

फैशवधरा

भगवती

भवती

अस्तुत

राजा

प्रजापति

जनकः

पिता

ते

चंदा

कुल

समी

पिता

ते

राजा

जनक

प्रजा

पाश्च

गृष्ण

कुल

सविता

च

is your
of your
guru &

प्रतिपदार्थः :-

| | |
|----------|---------------|
| विश्वमरा | = the earth |
| भगवती | = Goddess |
| भवतीम् | = you |
| असूत् | = gave birth. |
| राजा | = the king |

पूजापतिसमः = equal to the creator Brahma

जनकः = Janaka

पिता = Father

ते = yours

योः = whose

कुलंषु = vamsam

सविता = sun

त च = and

गुरुः = master

वयं = we

त च = and

भावः :- The goddess earth is your mother the king Janaka who is equal to the creator Brahma, is your father. You are the daughter in law of Surya vamsam and we are (I am) the guru to your dynasty.

* 4] ③ लौकिकानां हि साधूनामार्थं वाग्नुवर्तते ।
कुण्डीणां पुनाराद्यानां वाचमर्थेऽनुधावति ॥

प्रतिपदार्थः :-

लौकिकाना

लौकिकानां

हि

साधूना

अर्थ

वाक्

अनुवर्तते

कुण्डीणां

पुनः

आद्यानां

वाचं

अर्थः

अनुधावति

= Sophisticated In the world

= Because

= Of saints

= fate

= Word

= will follow

= of the sages

= again

= olden

= to the words

= fate

= will follow

5] ④ जामातृयः

युक्तः प्रजान

प्रतिपदार्थः :-

जामातृ - य

वर्ण

निश्चिह्नाः

त्वं

बालः

दुर + अर्थ

नवं

च

राज्यं

युक्त

प्रजान

अनुरक्ति

स्मा

तस्मात्

य

य

पर

भावः :- The words of saints will follow the fate. But the words of great sages are powerful. The fate will follow their words.

५) जामातृयर्जनं कथं निरुद्धास्त्वं बालं पुवासि नवं

च- राज्यम्।

शुक्लः प्रजानामनुरञ्जने स्यास्तस्माधशी यत्परमं धनं वः ॥

प्रतिपत्तार्थः :-

जामातृ- यर्जन = Because of dasaradha's son-in-law - 'Ri shyasinga's yaga;
कथं = we

निरुद्धाः = stayed here

त्वं = you

बालः = small boy

पुव + आसि = now

नवं = new

च = also

राज्यं = ruling the kingdom

शुक्लः = alert

प्रजानां = of the people

अनुरञ्जनं = welfare

स्याः = be

तस्मात् = because of this which you get

यशः = fame

यत् = that

परम् = incredible

धनं = prosperity

तः = to you

महाराज :- Due to Rishyasringa's yaga we stayed here for a long time. You are a small boy to rule the country and it is new to you. My advice is you take care of your people's welfare. Through this the fame which you can get is the superior treasure to you.

६] स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि
आराधनाय लौकस्य मुञ्चती नास्ति मे व्यथा॥

प्रतिपद्धति :-

| | |
|----------|----------------------|
| स्नेहम् | = My friendly nature |
| दयां | = concern feeling |
| च | = and |
| सौख्यं च | = my happiness |
| यदि वा | = in necessary |
| जानकीमपि | = this sita also |
| आराधनाय | = to serve |
| लौकस्य | = of the country |
| मुञ्चतः | = to depart from |
| नास्ति | = I don't have |
| मे | = to me |
| व्यथा | = any path |

महाराज :- For the satisfaction of the people in my kingdom, I am ready to leave my happiness, my luxuries and even sita devi also. To leave

all these 3

७] उत्पत्तिपरिपूत
तीर्थदं कं च
प्रतिपद्धति :-

उत्पत्तिपरिपूत
कि

अस्या

पावनान्तर

तीर्थदं कं

च

वहिनः +

न

अन्यत

शुद्धि

अहित

न

भाव :-

other other

Sacred wa

thing th

all these I don't feel any pain;

7] उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरः ।

तीर्थोदिकं च वज्रश्च नान्यतः शुद्धिमहि तः ॥

प्रतिपदाश्टः :-

उत्पत्तिपरिपूतायाः = By birth she is pure

किं

= what else

अस्याः

= to her (to sita)

पावनान्तरः

= other purifications

तीर्थोदिकं

= sacred water

च

= and

वहिनः + च

= Agni

न

= do not

अन्यतः

= by another things

शुद्धि

= purification

अहीतः

= need

त

= no

भाषा :- By her birth sita devi is pure. What other otherthings are need to purify her again! Sacred water and and Agni don't need any thing to purify them.

४] ब्रह्मादयो ब्रह्माहिताय तत्वा परस्परहस्ते शरदां तपांसि
एतान्यदशन्गुरवः पुराणः स्वान्येव तं जांसि तपीमयानि ॥

प्रतिपदार्थः :-

सम्बन्धिनः = relatives

वसिष्ठादीन् = Vasista sage and all

इषः = here

तातः = father Janaka

तव + अर्चति

अर्चति

गौतमः + ए

शतानन्दः

जनकानां

पुरोहितः

= honouring

= sage Gautama and

= Satananda

= of Janaka

= Priest.

भावः :- Here the king Janaka honouring to the relatives and vasista sage. Also satananda who in the priest of his family.

प्रतिपदार्थः :-

ब्रह्मादयः

ब्रह्माहिताय

तत्वा

परस्परहस्ते

शरदां

तपांसि

एतानि

अपश्यन्

= Brahma and all gods

= for the welfare of the world

= did

= thousands of

= years

= penances

= These weapons

= got the ability to see

गुरवः

पुराणः

स्वानि

एव तं जांसि

तपीमयानि

भावः :- The
their penance
of the world
weapons which

५] सम्बन्धिनौ

गौतमश्च

प्रतिपदार्थः :-

सम्बन्धि

वसिष्ठादीन्

इषः

तातः

तव + अर्चति

अर्चति

गौतमः +

शतानन्दः

जनकानां

पुरोहितः

भावः :- H

relatives a

as in the

| | |
|-------------|-------------------------|
| गुरुः | = those masters |
| पुराणः | = Olden |
| स्वानि | = Own |
| तुव तेजांसि | = Their lustre |
| तपोमयानि | = Appearance of penance |

भावः :- The creator Brahma and all other gods did their penances for thousands of years for the welfare of the world. Those olden gurus got a vision of weapons which are the form of their penances.

१) सम्बन्धिनीं वसिष्टादीनैष तातस्तवाचति ।

गौतमश्च शतानन्दा जनकानां पुरीहितः ॥

प्रतिपदाशः :-

| | |
|-------------|------------------------|
| सम्बन्धिनीः | = relatives |
| वसिष्टादीन् | = Vasista sage and all |
| एषः | = here |
| तातः | = father Janaka |
| तुव + अचति | = Your |
| अचति | = honouring |
| गौतमः + इति | = Sage Gautama and |
| शतानन्दः | = Satananda |
| जनकानां | = of Janaka |
| पुरीहितः | = Priest |

भावः :- Here the king Janaka honouring to the relatives and vasista sage. An also satananda who is in the priest of his family.

५०] जनकीन् रथाणं च समवदः कर्त्य न श्रियः।
यत् दत्ता ग्रहीता च स्वयं कुशिकानन्दनः ॥

प्रतिपदाशः:

जनकीन्

= of Janaka family

रथाणम्

= with sage king's family

च

= and

समवदः

= Relation

कर्त्य

= to whom

न

= is not

श्रियः

= Happy

कर्त्य

= This selection

दाता

= Donator of the bride

ग्रहीता

= Receiver

च

= Also

केषं

= He only

कुशिकानन्दनः:

कुशिका

only

भूतः

= Viswamitra only

— The relationship between Janaka's family and Raghava dynasty is a pleasing matter. who don't like? In this matter sage viswamitra who is the son of kusika is the kanyadaka and gruheta also.

११] जीवस्

प्रतिपदाशः

जीवत्य

तात्परा

नृता

सारसंग्रह

मातृत्वे

प्रतिज्ञा

सारसंग्रह

नृता

मातृत्वे

प्रतिज्ञा

नृता

सारसंग्रह

मातृत्वे

प्रतिज्ञा

नृता

११] जीवत्सु तातपादेषु नूतने दारसंग्रहै।

मातृभिक्षिचिन्त्यमानानाम् ते हि नो दिवसा गताः ॥

प्रतिपदार्थः :-

जीवत्सु = when he was alive

तातपादेषु = Respected father king dasaradha

नूतने = newly

दारसंग्रहै = our marriage

मातृभिः = (my) mothers

क्षिचिन्त्यमानानां = taking care of us

ते = those

हि = surely

नो = will not

दिवसाः = (those) days

गतः = past

भावः :- (Rama recollects the past and said these words to Laxmana) when our dear father was alive, when we were newly married, our three mothers always thinking about our needs. Surely those happiest days will not come back.

12] इङ्गुदीपादपः सौडयं शृङ्गवैरपुरुष पुरा ।

निषादपतिना यत्र श्विनेश्वीनासीत्समागमः ॥

प्रतिपदार्थः :-

इङ्गुदीपादपः = Ingudi named tree

स्तः + अर्थ = such is this,

शृङ्गवैरपुरुषे = In the Shiro Bringaveraipuram

पुरा = On that time

निषादपतिना = Tribal king guha

यत्र = where

श्विनेश्वीन = my friend

आसीत् = happened

समागमः = association

भावः :- This is that Ingudi tree. Here in
Bringaveraipuram, I met my friend guha.

विवेकानन्द विजयम्

सन्दर्भः :-

- 1] इह सार्वजनीन् उद्याने सम्यक् अनुशासनं पालनीयम्, स्वच्छता रक्षणीया?

कविपरिचयः :- This sentence is taken from "Vivekananda Vijayam" lesson written by ("Sridhara Bhaskara varmekal").

सन्दर्भः :- In Chicago city a lady said these words to the children who are playing in the garden.

मतः :- Children you should keep this garden clean, because this garden will be used by all people.

- 2] अहो धौरम् आँदासीन्यम् प्रथकाममात्रनिरतानां धर्म मीक्षि च।

कविपरिचयः :- This sentence is taken from "विवेकानन्द विजयम्" (Vijayam) lesson written by "श्रीधर भास्करः वर्षकारः" (Sridhara Bhaskara Narnekar).

सन्दर्भः :- When Vivekananda enquired about 'Viswadharma Parishad' in Chicago, no one gave the address, at that time he felt himself thus.

भाव :- What a surprise in this country, people are not having any interest in "धर्मसिक्षाम मीक्ष" Dharmasha Kama moksha.

5] अपूर्वः
कविपरिचय

संदर्भः

5] सर्वथा अपूर्ववेशां अपि सत्यस्पौडयं दृश्यते।

कविपरिचय :- same as ① one.

संदर्भ :- When vivekananda came there is the saint dress, the children who are playing in the garden were afraid of him. The lady said these words to the children.

भाव :- Oh! Kids don't be afraid of him, he looks like a great person.

4] मगवदनतार वरिष्ठस्य श्रीरामकृष्णवस्य दासानुदासीउर्य

कविपरिचय :- Same as ① जीवः ।

संदर्भ :- When a lady in Chicago asked Vivekananda who are you. Vivekananda replied her thus

भाव :- I am the disciple of Ramakrishna paramahansa who is the representative of God.

भाव :- 1.

6] लोकवण्डः

कविपरिचय

संदर्भ :-

happened

said

भाव :- He

Harvard

7] लोकधम्मः

कविपरिचय

संदर्भ:

about the

Rail

भाव :- You

of San

5] अपूर्वः कोई परमानन्दी व्याप्ति में हृदयम्।

कविपरिचयः :- same as ①

स्वतंत्रः :- After seeing vivekananda, Mrs. Hale felt like this.

भावः :- What a great feeling of happiness

6] लोकवर्णः खलु स हार्वड विद्यापीठस्य ग्रीकभाषा पठितः।

कविपरिचयः :- Same as ①

स्वतंत्रः :- When vivekananda said that he happened to meet Rokit Roit, then Mrs. Hale said these words about Roit

भावः :- He is a scholar in Greek language at Harvard University. He is famous

7] सर्वधर्मपरिवर्ति इन्दुधर्मस्य प्रातिनिधिं करोतु भवन्।

कविपरिचयः :- Same as ①

स्वतंत्रः :- Vivekananda explained to Mrs. Hale about this conversation with Roit and what Roit said to him.

भावः :- You do the representation of Hindu dharma of Sarva Dharma Parishad.

८] मधुप चाव विजानाति पुष्पर्षं मकारन्दम् ।

कविपरिचयम् :- Same as ①

संदर्भ :- Vivekananda said to Mrs. Hale about the words of Rolt. Then she responded thus.

भाषा :- The honey in the flowers will be noticed by the honeybee only.

९] स्वग्रामं भुवनं तस्य स्वदेशो भुवनतयम् ।

कविपरिचयम् :- Same as ①

संदर्भ :- Vivekananda said these words to the children and Mrs. Hale

HTd :- The person who is having the mercy of his master, to him the world is his own village and he feels his country is equal to all three worlds

संदर्भ

१] त२

कविपरि

lesson

कठोर

संदर्भ

place

time

return

HTd

want

three

२] या

कवि

210

fr

hi

HT

wh

gra

नन्दिकेतोपारव्याप्त

संदर्भ वाक्याणि :-

१] तस्मात्पति त्रीन् वरान् वृण्डः।

कविपरिचयम् :- This line is taken from the lesson 'नन्दिकेतोपारव्याप्त' which is a part of कठोपनिषद्।

संदर्भ :- Nachiketa went to Yamadharma-raja's place. There Yama is not available at that time he stayed there for Yama. After his return Yama said these words to Nachiketa

Htd :- You stayed here without food and waited for me. I respect you, you can ask three privileges; I can grant for you.

२] पीतोदका जब्दतुणा दुःधर्माह निरुपियाः।

कविपरिचयम् :- Same as १

संदर्भ :- After seeing the donations of his father at the time of yaga Nachiketa felt himself thus

Htd :- In this poor yaga he is donating the cows which are useless. They are old. They can't eat the grass cannot drink water and they don't give milk His offers are unworthy.

3] इवं च जीव शरदी यावदिष्ट्वा।

कविपरिचय :- Same as ①

सन्देश :- Yamadharma Raja said these words to Nachiketa.

भाव :- I can grant you big fortune, wealth, gold, cows and elephants and long life.

4] न हीदृशा लभ्यनीया मनुष्यः।

कविपरिचय :- Same as ①

सन्देश :- Yama said these words to Nachiketa while offering great things to nachiketa Yama told thus

भाव :- I am offering you the things which people never ever seen. They cannot be acquire by men.

5]. वरस्तु मे करणीयः स इव।

कविपरिचय :- Same as ①

सन्देश :- Nachiketa said these to Yama

भाव :- If I know the secret about death from you, it shall come to an end. I don't want all these things which you are offering.

6] अत्र्यो हि

कविपरिचय :

सन्देश :- y

desire, an

भाव :- The
his know

7] आश्र्यः -

कविपरिचय

सन्देश :-

and

words

भाव :- N

app

8] सर्व

कविपरि

सन्देश

Nachik

to him

भाव :-

६] श्रीय हि एरोडमिष्ट्रेयसो वृणीते।

कविपरिचय :- same as ①

सन्दर्भ :- Yama came to know, Nachiketa's strong desire, and said these words to him.

मत्त :- The person who is Dherra(strong man) with his knowledge will desire the श्रीयः (which is good)

७] आश्र्य वक्ता कुशलीऽसे लव्या।

कविपरिचय :- same as ①

सन्दर्भ :- After knowing Nachiketa's knowledge and his strong desire, Yama said these words to Nachiketa

मत्त :- Nachiketa! Your knowledge is great. I appreciate your curiosity.

८] सर्वं वेदा यत्यदमामनन्ति।

कविपरिचयम् :- same as ①

सन्दर्भ :- Yamadharma Raja was impressed with Nachiketa's knowledge and said these words to him while teaching ओंकार।

मत्त :- Vedas praises the omkara is the supreme in all mantheas.

१] यस्तु विश्वानवान् भद्रि ।

का॒वि॒परिचयः :- Same as ①

स्वदृष्टः :- Yamadharma Raja was impressed with Nachiketa's knowledge and said these words to him while teaching शिष्टार्थ।

हृदृष्टः :- If one can understand about शिष्टार्थ he can control his mind and can move in dharmamaarga.

नाचिकेति पूर्वोत्तम

Essay:-

Vajasrava performing Viswajit Yagam in which the performer had to give away all his wealth. He had a son named नाचिकेतः।

At the end of yaga, vajasrava giving Dakshina to brahmins and sages. He is giving away large herd of cows as दातृ। Nachiketa was surprised to see his father gifting away old cows which could not walk properly or give milk. He felt that by donating those cows his father would not get the desired result of the yaga.

Nachiketa asked his father "To whom he would like to gift his son? Nachiketa repeatedly asked the same question to his father. He became angry and said. "ते मर्यादा मर्हते ददाति"। I will give you to yama, to god of death.

Nachiketa decided to obey the words of his father by going to the abode of yama. He knew that all the things in this world are temporary and he was not afraid of death. He understood that following the path

of truth is the gateway to heaven.

Vajasrava was very sad but gave him permission as a follower of truth. Nachiketa left for the abode of Yama. Since Yama was not at home. For three days and nights he was waited without food and sleep at Yama's place. फारस्त्रियं तदा निराहारी गत्वा
नन्दिकेतोः प्रतीक्षामातः तिष्ठति ।

Yama on his return, was deeply grieved to see that there was no one to welcome अधिकारी. He greeted him with due respect. For having kept Nachiketa waiting for three days, Yama granted him three boons. Nachiketa said "I seek the welfare of my father. After my return from here to my father, he may receive me without any anger". as my first boon. He granted it.

He (Nachiketa) asked his second desire. "I desire to know how one could reach heaven? you know about fire sacrifice by which one can attain heaven you ~~can~~ teach me this." इति शत्रुघ्निः उपर्याप्तु रूप्यते । शत्रुघ्निः प्रदासुपदिशत् ॥

Yama granted the two boons with blessings. Yama pleaded with him and in

appreciation
after nachik

Nachiketa

"What happens
say it exists
not. I would
a teacher th

". Even the
about this
for some ot
me about
cannot thin
then this"

Yama

him as mu
life as he
this particu
all offers +

secret of

Yam

the vedes,

of a life

The syll

Brahman

known

37 - 77

appreciation named that particular 3rd boon,
after Nachiketa himself ३३४३५३६७:

Nachiketa asked his third boon to Yama.
"What happens to the soul after death? Some
say it exists after death. Others say it does
not. I would like to learn about it no less
a teacher than you" Yama hesitated and said
". Even the Gods in the past had their doubts
about this. It is not easy to understand. Ask
for some other boon instead, and don't force
me about the soul". Then Nachiketa said "I
cannot think of any better boon, which is better
than this".

Yama tries to appease Nachiketa by offering
him as much wealth, comforts and long health
life as he would ever wish for, and not ask for
this particular boon. But Nachiketa turned down
all offers. He said that he wanted to know the
secret of eternal soul.

Yama answered "the truth revealed in
the Vedas, the goal of all tapas; the culmination
of a life as of Brahmacharya it is claimed 'Om'.
The syllable 'Om' is Brahman, it is called
Brahman, the self. 'Om' is the highest. Having
known this, one fulfill all desires".

अथ - 'सर्वदा शत्यदमामनस'।

When all the desires in the heart
resolved, the mortal becomes immortal, he
attains Brahman in this very life. The wise
perceive it as existing within themselves and
enjoy all happiness. As pure water poured
into pure water becomes the same, so too
the wise through knowledge becomes ^{the}
all pervading self.

Nachiketa thus instructed in self
knowledge by Yama became free from sorrow
and death.

Writers

2. (80)

Aryabhata (476-550CE)

Aryabhata (476-550CE) He was the classical age of Indian mathematics and Indian Astronomy. He mentions in the ^{375CE} that his native place is Kusumapura or Pataliputra.

He went to Kusumapura for advanced studies and lived there for sometime. A verse mentions that Aryabhata was the head of an institution at Kusumapura. and because the university of Nalanda was in Pataliputra at the time and had an astronomical observatory. It is speculated that Arya Bhata might have been the head of the Nalanda University as well.

His major work 'Aryabhatiya' was extensively referred to in the Indian mathematically literature. This book covers Arithmetic, algebra, plane trigonometry and spherical trigonometry. The extreme brevity of the text was elaborated in commentaries by his disciple Bhaskara.

Aryabhata came from Southern Indian, but his precise place of birth is not known. Some writers opinion is that Kerala is the most likely location, other believe

that Dhaka or Maharashtra are more probable.

While working on the calculation of π , it is possible that Aryabhata may also have discovered that number's irrationality. 'Aryabhatiya' contains solid work regarding solar system. It states correctly that the light cast by planets and the moon is caused by sunlight reflecting off their surfaces and that all planets follow elliptical orbits.

He described about solar and lunar eclipse formation. He was the first astronomer who measured the perimeter of earth. Aryabhata says due to the reflection of sun race the moon and the planets are shining.

2. Bhaskaracharya:-

Bhaskaracharya belongs to 1114-1185. He was born in Bijapur in Karnataka. His work represent a significant contribution to mathematical and astronomical knowledge in the 12th century. He has been called the greatest mathematician of medieval India.

His main work '~~BRIGVUDHABHISHKOTI~~' is divided into 4 parts called Lilavati, Bijaganita, Grahe ganita, and Goladhyaya. These four sections deal with arithmetic, algebra, mathematics of the planets and spheres

respectively.

He con
was 36 year
of Brahma,
Padmanabh
He liv
father make
-hand astrologe

On 20
Organisation
honouring t

3. Kanada

Kanada
six orthodo
India. It i
According
were achie
the world

. Kana
father is
was said

'Goutama'

His
parts this
Anatom
imvisible

respectively. He also wrote 'Karanakaantukale'. He composed 'Siddhanta Siromani' when he was 36 years old. His works show the influence of Brahmagupta, Sridhara, Mahavira and Padmanabha.

He lived in the Sahyadri region. His father Mahesvara was a mathematician, astronomer and astrologer. He taught him mathematics.

On 20-Nov-1981 the Indian Space Research Organisation launched the Bhaskar satellite honouring the mathematician and astronomer.

3. Kanada (काण्डा) :-

Kanada wrote दर्शक! It is one of the six orthodox schools of Hinduism from ancient India. It is known for its insights in naturalism. According to 'Vaisesika' knowledge and liberation were achievable by complete understanding of the world experience.

Kanada belongs to Kasyapa gotram. His father is 'Utaka'. He lived near Nalabhad. It was said that Kanada was the contemporary of 'Goutama'.

His vaisesika book was divided into Ten parts. This book espouses a form of atomism. Atom is that which is indestructible, invisible and has a special kind of dimension.

Whatever human beings perceive is composite
and even the smallest perceptible thing
namely a flake of dust which is not infinite.

He wrote 370 sutas in this book. It
consists 20 chapters. He described the Qualities
of righteousness. He explained that Dharma is
the main theme of vedas.

One can understand the shape of Dharma
and its Qualities through vedas. By Practising
the Dharmas we can achieve Moksha it was
said by Kanada in his vaishesika sashtra.

4. Sankaracharya:-

Our Indian culture is rich and dates
back atleast to 3000 year. The first literary
records are vedas. Vedas discussed the questions
relating to philosophy, soul, god, creation,
Karma Siddhanta. Salvation and realisation of the
self. Hence the unpanist upanishads are known
as vedanta.

Sankaracharya flourished in 7th or 8th century
A.D. According to modern scholars. He lived for a
short span of life 32 years only. His parents are
Sivaguru and Ayyamamba. Kaladi in Kerala
was his birth place.

Sankaracharya has commented on Brashanabop
he composed many stobas which are in praise
of the deities. Bhaja gourinda, Syamaladankaka
Aparadha satake are popular. He advocates

non duality
atmagnana

His 370
mystic stobas a
famous work

His deve
have made him
and a great
He has
even now pro
tends into a
He wrote ma
upanishads

5. Bhasa (H)

Drama
scholars opin
literature in
world drama
gems of all

Bhasa
the earliest o
remembers b
to historian

Panini the
Bhasa to

Bha

5 groups -
plays in

Holland

is composed
thing
of invisible
look. &
Qualities
harm is

& Dharma
practising
- it was
astra.

dates
rarey
estions
is
of the
known
century
d for a
nts are
data

thanabays
raise
lankaka,
vocates

non duality, importance of true knowledge-
satwagnana.

His Stotrodatt, Dhoadatt, Dakshina
mystostaa and Siva Bhujanga Stotra are
famous works.

His devotion, Lucid language, logical approach
have made him an idealist, a poet, an organised
and a great advaita exponent.

He has established five mutts in India which
even now propagate his ideals and translate his
tenets into action. He is a great advaita philosopher.
He wrote many commentaries on Brahma sutra,
Upanishads and Bhagavad gita.

5. Bhasa (भासा) :-

'Drama is the end of literature' is the
scholar's opinion. The vast Sanskrit Dramatic
literature was the earliest in the history of
world dramatic literature. There are many invaluable
gems of dramas in the Sanskrit Dramatic literature.

Bhasa was the author of Pratima nataka. He was
the earliest of the Sanskrit Dramatists. Every one
remembers him with devotion and respect. According
to historians Bhasa was a predecessor to Kalidasa,
Panini the author of स्तोत्रेण्टर्पति and even
Bhasa to the composer to Nat of Natyasashtra.

Bhasa wrote 13 plays, can be divided into
5 groups based on the plot of the play. These 13
plays were published under the title of
प्रतिकृष्ण रथम्.

1. Two plays based on Ramayana. They are
प्रतिमा नाटक, अश्रिष्टक नाटक.
2. 6 plays based on Mahabharata
1. मध्यम व्यायोग, 2. Panchatantram 3. दूतधर्मीका
4. कण्ठभारम् 5. ऊरुभंग 6. दूतवाक्यं
3. One play based on Bhagavat gita
That is श्री ब्रह्मरितं।
4. Plays based on Brihatkatha Manjari
Those are 1) प्रतिज्ञायोगदारायण 2. स्वानवासवदत्त
5. Original theme one
चन्द्रदत्तम्।

प्रत्ययः

1] कालान्ति प्रत्ययः

गम्लू + कर्त्वा = गत्वा

धृ + कर्त्वा = धृत्वा

स्था + कर्त्वा = स्थित्वा

दृश्यू + कर्त्वा = दृष्ट्वा

वच् + कर्त्वा = उत्वा

नी + कर्त्वा = जित्वा

शृ + कर्त्वा = शृत्वा

पठ् + कर्त्वा = पठित्वा

लभ + कर्त्वा = लब्ध्वा

कथ् + कर्त्वा = कथित्वा

स्तु + कर्त्वा = स्तुत्वा

कृ + कर्त्वा = कृत्वा

लिख + कर्त्वा = लिखित्वा

चिन्त् + कर्त्वा = चिन्तायित्वा

दूर + कर्त्वा = दौरयित्वा

भुज् + कर्त्वा = भुक्त्वा

खा + कर्त्वा = खादित्वा

दा + कर्त्वा = अदत्वा

भू + कर्त्वा = भूत्वा

पा + कर्त्वा = पत्वा

शो + कर्त्वा = शोत्वा

गण् + कर्त्वा = भगणयित्वा

झू + कर्त्वा = झूत्वा

२. तुमन् पत्यः

गल् + तुमन् = गल्तुम्

स्था + तुमन् = स्थातुम्

वच् + तुमन् = वक्तुम्

नी + तुमन् = नैतुम्

जि + तुमन् = जैतुम्

ओ + तुमन् = ओतुम्

पठ् + तुमन् = पठितुम्

लभ + तुमन् = लब्धितुम्

कथ् + तुमन् = कथितुम्

स्तु + तुमन् = स्तौतुम्

कृ + तुमन् = कर्तुम्

लिख + तुमन् = लैखितुम्

चिन्त् + तुमन् = चिन्तयितुम्

चुर + तुमन् = चौरयितुम्

भुज + तुमन् = भीक्तुम्

खा + तुमन् = खादितुम्

दा + तुमन् = ददतुम्

भ्र + तुमन् = भवितुम्

पा + तुमन् = पातुम्

३. तव्यः

गम्ल् + तव्यः

स्था + तव्यः

वच् + तव्यः

नी + तव्यः

जि + तव्यः

ओ + तव्यः

पठ् + तव्यः

लभ + तव्यः

कथ् + तव्यः

स्तु + तव्यः

कृ + तव्यः

लिख + तव्यः

चिन्त् + तव्यः

चुर + तव्यः

भुज + तव्यः

खा + तव्यः

दा + तव्यः

भ्र + तव्यः

पा + तव्यः

जा + तव्यः

३. तत्व प्रत्ययः

| | <u>पुलिङ्गः</u> | <u>स्तीलिंगः</u> | <u>नंपुस्कलिंगः</u> |
|-----------------|-----------------|------------------|---------------------|
| गम्ल् + तत्व = | गन्तव्यः | गन्तव्यम् | गन्तव्या |
| स्था + तत्व = | स्थातव्यः | स्थातव्या | स्थातव्यम् |
| वक्त् + तत्व = | वक्तव्यः | वक्तव्या | वक्तव्यम् |
| नी + तत्व = | नैतव्यः | नैतव्या | नैतव्यम् |
| जि + तत्व = | जैतव्यः | जैतव्या | जैतव्यम् |
| श्रृ + तत्व = | श्रीतव्यः | श्रीतव्या | श्रीतव्यम् |
| पठ् + तत्व = | पठितव्यः | पठितव्या | पठितव्यम् |
| लभ + तत्व = | लब्धव्यः | लब्धव्या | लब्धव्यम् |
| कथ + तत्व = | कथितव्यः | कथितव्या | कथितव्यम् |
| स्तु + तत्व = | स्तीतव्यः | स्तीतव्या | स्तीतव्यम् |
| कृ + तत्व = | कर्तव्यः | कर्तव्या | कर्तव्यम् |
| विनिख + तत्व = | विनितव्यः | विनितव्या | विनितव्यम् |
| विलिख + तत्व = | विलिखितव्यः | विलिखितव्या | विलिखितव्यम् |
| चिन्त् + तत्व = | चिन्तितव्यः | चिन्तितव्या | चिन्तितव्यम् |
| चुर् + तत्व = | चौरयितव्यः | चौरयितव्या | चौरयितव्यम् |
| भुज् + तत्व = | भौक्तव्यः | भौक्तव्या | भौक्तव्यम् |
| खा + तत्व = | खादितव्यः | खादितव्या | खादितव्यम् |
| दा + तत्व = | दातव्यः | दातव्या | दातव्यम् |
| भू + तत्व = | भवितव्यः | भवितव्या | भवितव्यम् |
| पा + तत्व = | पातव्यः | पातव्या | पातव्यम् |
| जा + तत्व = | जातव्यः | जातव्या | जातव्यम् |

| | <u>पुलिंगः</u> | <u>स्त्रीलिंगः</u> | <u>नपुंसकलिंगः</u> |
|------------------|----------------|--------------------|--------------------|
| गण् + तत्व = | गणितव्या | गणितव्या | गणितव्यम् |
| स्मृ + तत्व = | स्मरत्वा | स्मरत्वा | स्मरत्वम् |
| धृ + तत्व = | धरत्वा | धरत्वा | धरत्वम् |
| दृश्यर् + तत्व = | द्रष्टव्या | द्रष्टव्या | द्रष्टव्यम् |

| | <u>पुलिंगः</u> | <u>स्त्रीलिंगः</u> | <u>नपुंसकलिंगः</u> |
|---------------------------|----------------|--------------------|--------------------|
| 4. <u>क्तवत् प्रत्ययः</u> | | | |

| | | | |
|-------------------|-------------|------------|------------|
| गम्ल् + क्तवत् = | गतवान् | गतवती | गतवत् |
| स्था + क्तवत् = | स्थितवान् | स्थितवती | स्थितवत् |
| वच् + क्तवत् = | उक्तवान् | उक्तवती | उक्तवत् |
| नी + क्तवत् = | नीतवान् | नीतवती | नीतवत् |
| जि + क्तवत् = | जितवान् | जितवती | जितवत् |
| शृ + क्तवत् = | श्रुतवान् | श्रुतवती | श्रुतवत् |
| पठ् + क्तवत् = | पठितवान् | पठितवती | पठितवत् |
| लभ + क्तवत् = | लब्धवान् | लब्धवती | लब्धवत् |
| कथ् + क्तवत् = | कथितवान् | कथितवती | कथितवत् |
| स्तु + क्तवत् = | स्तुतवान् | स्तुतवती | स्तुतवत् |
| कृ + क्तवत् = | कृतवान् | कृतवती | कृतवत् |
| लिख + क्तवत् = | लिखितवान् | लिखितवती | लिखितवत् |
| चिन्त् + क्तवत् = | चिन्तितवान् | चिन्तितवती | चिन्तितवत् |
| भुज् + क्तवत् = | भुक्तवान् | भुक्तवती | भुक्तवत् |

नपुस्कलिंगः

गणितव्यम्

स्मृतव्यम्

धृतव्यम्

षट्व्यम्

पुंसकलिंगः

वत्

येत्वत्

त्वत्

नवत्

तित्वत्

वत्

वत्

वत्

नवत्

वत्

येत्वत्

त्वत्

नवत्

वत्

| | <u>पुलिंगः</u> | <u>स्त्रीलिंगः</u> | <u>नपुस्कलिंगः</u> |
|-------------|----------------|--------------------|--------------------|
| खा + वत् | खादितवान् | खादितवती | खादितवत् |
| दा + वत् | दत्तवान् | दत्तवती | दत्तवत् |
| पा + वत् | पीतवान् | पीतवती | पीतवत् |
| शा + वत् | शातवान् | शातवती | शातवत् |
| गण् + वत् | गणितवान् | गणितवती | गणितवत् |
| स्मृ + वत् | स्मृतवान् | स्मृतवती | स्मृतवत् |
| धृ + वत् | धृतवान् | धृतवती | धृतवत् |
| इशिर् + वत् | इष्टवान् | इष्टवती | इष्टवत् |

5. क्त प्रत्ययः :-

| | <u>पुलिंगः</u> | <u>स्त्रीलिंगः</u> | <u>नपुस्कलिंगः</u> |
|-------------|----------------|--------------------|--------------------|
| गम्ल् + क्त | गतः | गता | गतम् |
| स्था + क्त | स्थितः | स्थिता | स्थितम् |
| वच् + क्त | उक्तः | उक्ता | उक्तम् |
| नी + क्त | नीतः | नीता | नीतम् |
| जि + क्त | जितः | जिता | जितम् |
| भृ + क्त | भ्रुतवान् | भ्रुतवती | भ्रुतवत् |
| पठ् + क्त | पठितः | पठिता | पठितम् |
| लभ् + क्त | लब्धः | लब्धा | लब्धम् |
| कथ् + क्त | कथितः | कथिता | कथितम् |
| स्तु + क्त | स्तुतः | स्तुता | स्तुतम् |
| कृ + क्त | कृतः | कृता | कृतम् |

| | <u>बुलिंगः</u> | <u>स्त्रीलिंगः</u> | <u>नपुंसकलिंगः</u> |
|---------------|----------------|--------------------|--------------------|
| लिख + क्त = | लिखितवान् | लिखितवती | लिखितवत् |
| चिन्त + क्त = | चिन्तितवान् | चिन्तितवती | चिन्तितवत् |
| भुज + क्त = | भुक्तवान् | भुक्तवती | भुक्तवत् |
| खा + क्त = | खादितवान् | खादितवती | खादितवत् |
| दा + क्त = | दत्तवान् | दत्तवती | दत्तवत् |
| पा + क्त = | पीतवान् | पीतवती | पीतवत् |
| शा + क्त = | शातः | शाता | शात |
| गण + क्त = | गणितवान् | गणितवती | गणितवत् |
| स्मृ + क्त = | स्मृतवान् | स्मृतवती | स्मृतवत् |
| धृ + क्त = | धृतवान् | धृतवती | धृतवत् |
| हशिर + क्त = | हष्टः | हष्टा | हष्टम् |

Vivekananda Vijayam

Essay :-

The lesson has been taken from the Drama "Vivekananda Vijayam". It is written by Acharya Sridhara Bhaskar Varnekar. It has 10 acts. Our lesson is taken ~~from~~ from 8th act, "America Pravesha"

On the permission given by his guru Sri Ramakrishna Paramahansa, Vivekananda proceeded to attend the world religious conference which would be held in the city Chicago in United States of America. He left India from Mumbai port with little money and blessing of his Guru.

The lesson starts with entry of Vivekananda into beautiful park blooming with many flowers. He watches children playing and dancing according music sung by their caretaker. Their teacher gives them instructions not pluck flowers and not destroy anything in the park. She leaves them to bring something from inside, just then children will be screaming seeing shabby looking person with torn clothes. Some were crying loudly, and some were running here and there. One among the children a naughty boy picks up stones and hurls at him. He also tells other children to throw stones at him.

Seeing the behaviour of the children, Vivekananda feels very sad and thought to himself thus, "Oh these children of this country are not any etiquette regarding strangers. Even the olders elders behave thus. I feel very sad of their soul cultural upbringing".

Just then the teacher arrives there to realize that some person in torn robes was insulted with stones thrown by the children. She will stop them and enquires who he was. Vivekananda in mild stone tone replies that he was the disciple of Sri Ramakrishna Paramahansa, and on the divine updesha, to spread the greatness of Indian culture and tradition. I have come here to participate in the World Religious conference. Please guide me to the members of the Conference.

The teacher led him to Mrs Hell. As he was approaching her, she was enquiring about him clad in kashaya dress. As sv Vivekanan went near her and bowed to her, she greeted him thus, "Oh I have seen you in my dream yesterday and got the divine message that a youth of brilliant brightness would approach you. I am extremely happy and surprised to see you. I feel as if I am

meeting saying having gestures was diss letter he conference Vive arrival in "Peninsu Hongkong He was the elder After a the offic conference He was participating letter purpose doesn't him. As he so that

By be happy be an in he Mr. K danger

meeting a close friend. Welcome to Chicago, saying thus she enquired whether he is having any recommendation letter. He gestures that he doesn't have anything. Mrs Hell was disappointed and said that without letter he will not be allowed to attend the conference.

Vivekananda starts to tell his story of arrival in Chicago. He boards the ship named, "Peninsular". After crossing, Penang, Singapore, Hongkong, Nagasaki, reached the city of Chicago. He was insulted for his Sanyasi dress, by all the elders and children where ever he went. After a tiring journey of 22 days having reached the office of conference he realizes that the conference starts in the second week of September. He was upset to know that who ever wants to participate he needs to have a recommendation letter. It was a big jolt for him, that the purpose of his coming is wasted, since he doesn't have any recommendation letter wh with him. Helpless and sad wandered for shelter. As he could afford money he started for Boston, so that he can think about his next move.

By the grace of his guru in the train journey he happens to meet Mrs. Sunbeam who happens to be an influential person. She gave him shelter in her palace. There he gets a chance of meeting Mr. Right who was a professor in Greek language in Harvard University and a philanthropist.

He happens to have heard the thought of Vivekananda and was influenced by his oratory about the greatness of India. Thus he gave a letter of recommendation for the world conference thus saying his story he handed the letter to Mrs. Hell. Hell reads the letter which states that, "Here is a man who is more learned than all professors put together to ask for his credentials is like asking the sun about its right to shine". Mrs. Hell was pleased and spoke thus to Vivekananda. O son take some rest in my rest home then we shall proceed to the conference.

As they were about to go then the teacher arrives with the children making apologize for their behaviour towards him. Vivekananda took pleasantly the child on to his shoulder and remembers Goddess Parameshwari and the blessing of his Guru. He says one who has the blessing of Guru on their head he shall be applauded all over the world.

दक्षर कथा

The lesson दक्षर कथा is a part of शृङ्गर रुद्रयक । 5th chapter.

The creator Brahma had three types of children. Deva, manava and Danava. They always fight with each other for a long time.

The Devas think deeply to get rid off this miserable condition. They went to the Prajapati and bowed him. They asked him to show a way to live peacefully. He advised them to practise धर्म. They followed Brahmacharya and after some years they went to the creation and asked him to give a message which can lead them to happy life. Brahma gave them 'E'। The Devas who are disciplined and who practised Brahmacharya, understood the meaning of दक्षर । and they went back. दक्षरति न अद्यति।

Then the manavas(human beings) went to Prajapati and asked him to give a message. Brahma gave them one more दक्षर । In the world human beings are generally greedy and selfish. Due to this reason Brahma messaged charity through दक्षर । Human beings understood the meaning of दक्षरति न अद्यति, which was given by the creator and they went back to their homes.

At last the demons अदृष्टः went to

Brahma and asked the same as Devamanava. He gave a दक्षिण to them also.

They understood that दक्षिण meaning is Day. Demons are cruel by nature. For that reason Brahma gave them दक्षिण which means Daya (pity). दयादर्शित अस्यैति, They felt happy with their message and went back.

The three wishes virtues are the दक्षारत्रय दायत्र दत्त दयादर्शिति. Thus daksaratray means control, charity and compassion. दमं दानं दयामिति, one should acquire these three virtues to reach moksha.

Rajavas
his
were
fighting
secret
was a
life.
Charita
his
Harsha

Sanskrit

1. Ratri

the lo

after
entered
minis
name
Vasav

2. Pri

Leadi

St Writer

vi) Harshavardana:-

Harshavardana was the successor of Rajavardhana his elder brother. Rajasri was his sister. Yashonathi and Prabakaravardhana were their parents. Rajavardhana after fighting with enemies killed by them in a secret project / plan then suddenly Harshavardana was described as he came to throne of the life of Harshavardana was described as Harsha Charitam by Bhana Batta. Bhana Batta was his court poet according to his composition Harshavardhana ruled the kingdom 606-647 A.D.

Harshavardhana composed 3 Ragakas in Sanskrit.

1. Ratnavali:

This is a fourth act play which narrated the love story of king Udyana and sagarika after some accident Princess Katnavali entered Udyana's kingdom by the help of minister Yognandanayana who changed her name as sagarika by the blessings of Queen Vasavadatta she could marry Udyana.

2. Priyadarshika:

This four act play of Harshavardhana describes the love story of Udyana and Kranyakka the story is similar to Ratnavali.

but the heroine was named as Aranyak because she was found alone in a forest

3. Nagarandam:

This is five act play Geemutavahana story his service to his parents his love for Malayavathi, their marriage and the protection of Shankachuda by Geemutavahana his death, his rebirth by the blessings of Gowri Mata. Gouthman's oath regarding the welfare of snakes all these things were narrated in this drama.

The slokas of above dramas were used as examples in Dashaduprakam.

दृक्तार कथा

1] द, द, द दाम्यत्, दत्, दयधमिति।

कविपरिचयः :- This line is taken from the lesson "दृक्तार कथा" is an extract from the 'Brihadaranyakopanishad'.

सन्दर्भः :- The divine voice thus repeated the teaching of the Prajapati and the meaning understood by the Gods, human beings and the demons

मतः :- 1) Da, Da, Da = Control, Donate and be compassion - ate
2) Self-control, charity, or compassion

2] दमं दानं दयामिति।

कविपरिचयः :- This line is taken from the lesson "दृक्तार कथा" is an extract from the 'Brihadaranyakopanishad'.

सन्दर्भः :- The divine voice thus repeated the teaching of the Prajapati and the meaning understood by the Gods, men and the demons

मतः :- Self control, charity, and compassion

संदर्भनि:- चित्रपटदर्शनम्

1] संकट द्वाहिताग्नीनि प्रथवायै मृहस्थात् ।

कविपरिचयः :- The above sentence is taken from Chitrapatadarshanam extracted from written by Mahakavi Bhasa.

संदर्भः :- After the coronation of Rama the relatives of and other family leave Ayodhya to their respective places due to which Sita was feeling very sad. Rama approached Sita and he spoke thus.

उत्तरः :- It is very difficult for a gruhasta to leave his house to settle and to stay elsewhere because he has the responsibility of doing yagna daily.

2] अष्टवृत्ति पुनराद्यान्ते दाचमर्त्स्नुधावति ।

कविपरिचयः :- Same as 1.

उत्तरः :- Rishi Ashtavakra on the behalf of Vashista Maharshi and the three mothers came to deliver the message to Rama. He will be praising Sita and gave her the blessings that she may become the mother of brave child, future king of Ikshwaku Namsha.

उत्तरः :-

उत्तरः :- " In the morning words were certain forms.

The book was very good.

4] 2
किं
संद
Sita
Da
men
See

अ३२६: - Rama spoke to ^{Rishi} Ashvavakra thus
"In the world the sage of saints follow
the meaning that the sage of great sages
the meaning the meaning is followed by
word

3]. तथा दिक्षुं च वक्षिश्च नाम्यतः शुद्धिमहितः ।

कविपरिचयः :- Same as 1

संदर्भः :- When Rama, Laxmana and Sita
were looking at a picture gallery they spots
certain missiles which were having divine
forms. glow. Rama spoke thus.

These are the divine missiles given to me on
the banks of river ganga be sacred waters are
very pure which regenivates us.

अ३२७: - Rama spoke about the sacredness of
river ganga to sita thus. The holy water of
river ganga made us more sacred and sitting
on the banks of river ganga we will blessed
with missiles

4] यत दीता ग्रहीत्वा च स्वयं कुशिकनोद्देनः ।

कविपरिचयः :- Same as 1

संदर्भः :- After Swayamvara of Rama and
Sita, King Janaka sends a message to
Dasharatha to come along with the family
members to participate in the marriage.
Seeing the glorious alliance between the

two families of Rama and Sita. Above words were spoken by Rama.

अ२६:- Rama spoke where the donor, King Janaka who gave his daughter himself is very fortunate who have alliance with Ikshwaku family.

5] मातृभिरुचेन्यमानान् ते हि नो दिवसा

गताः ।

कविपरिचयः :- Same as 1

संदर्भः :- Rama, Sita along with Lakshman will see the picture gallery of serving their parents. He will remember those golden days.

अ२७:- Rama spoke thus we were having very good time with all our mothers taking care of us. Gone all the golden days.

6] हन्त ! वर्तमान इन मे जनस्थानवृत्तान्तः
प्रतिभाति।

कविपरिचयः :- Same as 1

संदर्भः :- As Rama and Sita move forward in looking the picture gallery, the scene of franchavati attracts their attention. They remembered how they led their lives

in between
with peace

~~4] ३~~ Rama

~~3२८~~ Rama

अ२८:- Rama
place is loc
city. I coul
life at th

~~५~~ अपि ग्रावा
कविपरिचयः :-

संदर्भः :- L
when Sita
Rama was
shocks an

अ२९:- Lar
crying pe
even the
lamenta
the heal

~~६] तदिद~~

~~७] तदि~~

in between the lust environment filled
with peace and riverlets

4] 3 Rama appreciates the scenery and
3T2f. Rama and Sita - he spoke thus

3T2f. :- Rama spoke thus "Oh! the whole
place is looking like the pleasant
city. I could remember how we led our
life at that time

4] अपि ग्रावा रौद्रित्यपि दलति बजस्य हृदयम् ।
कविपरिचयः :- Same as 1

स्तोत्र२f. :- Laxmana describes Rama's sorrow
when Sita was missing. He describes how
Rama was crying and asking the trees,
shocks and stones regarding Sita.

3T2f. :- Laxmana spoke thus Rama was
crying profusely, his sorrow could make
even the stones melt such was the
lamentation of Rama. It will move even
the heart made of diamond.

8] तृष्ण

8] तृष्ण

8] तदिदमभूत्य परिसरे मतङ्गाभ्यपदम्, तत्
शमणा नाम शिष्टो शबरतापसी।

काव्यपरिचयः :- Same as 1

संदर्भः :- Laxmana will explain about the Ashrama which they reached which search Sita. They ^{will} encounter a old women who was staying in the Ashrama which belonged to muni Matanga. The old lady was tapasi and by name Shabari. She was waiting for the arrival of Karna.

अथ ३१ :- Two men who was The old women who was saint by name Shabari was at Ashrama of Matanga Muni then pick

9] यस्य रूपे रुपो रुपो वये एत मुखनामि एति।

काव्यपरिचयः :- Same as 1

अथ ३२ :- Then the picture of Hanuma was seen by Rama, Laxmana and Sita. Seeing Hanuman Rama spoke thus. He is very dear to me and shall never forget his help in searching Sita.

अथ ३३ :- Rama spoke thus He is the one whose results of bravely ^{are} discussed all over the world and we have we are indebted to him.

10] निक
कविप
संदर्भ
pic
of n
som
sleep
me
sever
sus
अथ ३४
लेह
वा
गि
ल्ल

10] चित्रदृश्निद्विरहभावना देव्या: स्वभावीति करीति।
कविपरिचयः :- Same as :-

संदर्भः :- Sita will get tired by observing picture gallery. She rested on the shoulder of Rama. At that time she was after some time she was murmuring in the sleep thus Oh! Lord please do not leave me at this hour. I have already faced separation from you, at this hour I cannot sustain any separation from you.

उत्तरः :- Seeing ~~s~~ Sita murmuring in the sleep Rama spoke ^{to} himself thus Oh after seeing the picture gallery Sita was agitated by mind. Hence she is agitated by mind.

FATIGUE LESSON

The lesson Chitrapradharshanam is taken from the drama Uttaramacharitam. It is written by Mahakavi Bhavabhuti. It has 7 acts. The present lesson is taken from the first act. The lesson deals with showing of picture gallery to Sita by Sri Rama.

After the coronation of Rama as king, the three mothers along with sage Vasistha goes to attend 12 long year sacrifice which is performed by sage Kshyashrunga, who is the son in law of king Dasharta and husband of Shanta.

King Rama goes to pacify Sita who was pregnant and was feeling distressed by the fact that her father and relatives are leaving Ayodhya. Rama goes to see Sita and pacifies that the house hold has many sacrifices to perform the sacrificial altar. As he was talking to her the messenger delivers the message of the arrival of Rishi Ashtavakra. Sri Ram immediately welcomes him, honors him respectfully. They both bow to him. Ashtavakra give the blessing to Sita that she was blessed to be the daughter of the Mother Earth, she is the daughter of the great King Janaka, who is equal to Prajapati himself, she is the daughter in law of

of those few
She is surely
who is going
family.

He came
Sage Vasistha
Sunitra so
young and n
always try t
king. Always
he also say
and more
the duty
junction.

King
atmost
his duty
bring hi
his dut

Asha
blessing t
with t
Rama an
will go
entertain

As
enquire
light
Lord
divine
upon

am is taken
It is
It has 7
from the
showing
Rama.

as king,
Vashista
ce which
a, who is
and

sita who
rescued
relatives
s to see
holder

ng to her
of the
Rama
respectfully.

give
s blessed
arth,
king
i
law of

of those people who were born in Raghuwam.
She is surely be blessed to give birth to a son
who is going to be the heir to the Ikshvaku
family.

He came there to deliver the message of the
Sage Vashista and three mothers Kausalya,
Sumitra and Kaikeyee. As Rama was
young and new to the administration he should
always try to win the people by being an idol
King. Always the duty of king come first. And
he also says that he was newly wedded man
and more over Sita is pregnant. It becomes
the duty of him to take care of her at this
juncture.

King Rama receives the message with
almost modesty and says that he will keep
his duty foremost and he will not even
bring his wife Sita in between him and
his duty.

Ashtravakra takes leave by giving his
blessing to them. Just then Lakshmana arrives
with the picture gallery. Lakshmana invites
Rama and Sita to see the picture gallery. All
will go to see them. Rama finds easy to
entertain Sita.

As they sit see the gallery she will
enquire about divine missiles with bright
light which was obvious in the picture.
Lord Rama explains that they are the
divine missiles which were meditated
upon by sages. They have been given by

Brahma himself and was bestowed upon him by sage Vishwamitra to him. Sita will bow to them. Rama gives the boon that these missiles will be installed so that the son who is going to be born to her.

They move on to another picture where Sita Swayamvaram was conducted and Rama broke the Shiva bow to win Sita. As he was trying to string the bow broke with a thunder, everybody was happy. Sita garlanded Rama and chose him as her husband. King Janaka sends a message for the family of Dhasharata to participate in the marriage. Rama also remembers the happy occasion of marriage. He also quotes that everybody were happy by the fusion of the two families of King Janaka and King Dhasharata. King Janaka was the giver and the receiver of the luck by begetting Rama as son in law.

Rama Sita and Lakshmana remember the day when four brothers were married the four daughters of King Janaka. As everybody were immersed in happy moment than arrived Parushwama Maharshi.

Seeing the arrival of sage Parushwam in the gallery, Sita will tremble in fear, just then Rama diverts her mind to the picture of their returning to Ayodhya.

Those were days where Rama and brothers and their respective wives were loved and taken care by the Dasharata and his wives, as small children.

Then the picture of Rama leaving to forest along with Sita and Lakshmana is seen by Sita, & as she was remembering the act of Manthara, Sri Rama immediately divests the mind to Inquidi tree. Lakshmana understoands the mind and continues to say thus, this the tree where we met our dear friend Guha the forested, the king of Nishada. He continues to say that the holy vow of leading a life in the woods which the descendant of Ikshavaku race practiced when aged and after rendering the responsibilities, but Sri Rama has taken at that at very young age.

Then they see the picture of holy Ganga Rama remembers that it was the divine holy waters of Bhagirathi that were sprinkled on his ancestors, who were the sons of King Sagara, who were reduced to ashes by the wrath of sage Kapile.

Then Lakshmana shows the beautiful tree Shyama on the bank of the river Kalindi, by the side of road leading to Chitrakut.

Rama remembers the time when Sita used to rest on the bank of the river Kalindi, by the side of the road leading to shoulder of Rama when she was fatigued by journey. Both of them remember the happy time of together

Then Sita remembers how Rama used to hold umbrella for her from sun. Then they see the picture of mountain Prasavana situated in the middle of Janasthana surrounded forest with dense trees on account of thickly growing clump of trees. As they were seeing the beauty of the Panchavati Sita express her anguish when she was abducted. They will see the picture of Surpanaka. Sita laments that a wicked person causes uneasiness. Rama remembers that the picture gallery seems to happen at the present moment. Lakshmana continues that the action wicked rakshasas by using golden deer in kidnapping Sita.

This incident bough great doom on Sri Rama. The deer Janasthana even the stones wept seeing rama lamenting for Sita. when she was lamenting thus to divert her lakshmana show the picture of Jatayu the eagle king who tried to protect Sita from Ravana. Rama and lakshmana bow to Jatayu. Then continue to show the picture of andaka forest where they meet the female ascetic Sabara tribe by name Shramana, who stayed beside lake Pampa. Then he introduces Hanuman the mighty benefactor, who came to Rama rescue in searching Sita. As she watches, the picture of Rama crying profusely at the loss of Sita. Just then Rama intervenes to remove

the pictures as he cannot sustain the
pain of losing Janaki once again. But
Sita express her wish to roam in the
forest once again along with Rama. Then
Rama orders to Lakshmana that as per the
orders of the elders, Sita's every wish has to
be fulfilled at this time, hence arrangement
is to be made. Sita wishes that even Rama
should accompany her. Rama agrees with her
wish. Sita was feeling very tired out of the
anxiety she was sweating, Rama takes her to
the window to take rest. Sita keeps her
head on his shoulder and takes rest. Rama
observes her and praises her thus she is the
goddess Laxmi of my house and she is the
collirium of my eyes. Her touch is like
Sandal wood paste on body. Her arm twined
round my neck is like cool and smooth as
pearl string, but separation from her is exceedingly
unbearable.

As Rama wanted to relieve himself, Sita
holds his hand and mumbles her agony that his
separation will not be sustained by her again.
Rama watches Sita lamenting in the sleep.
He thinks thus Sita was agitated by the
picture gallery and thinks that to be true.
But Rama leaves the place remembering
the duty of king which comes in first
place.

Alank Alamkaras

2) Upamoupmeya Alamkar:
Def: When
special
both
is
is
verso
Exam

1] Upamoupmeya Alamkar:

Def:-

Where upamana and upmeya are present in a sentence successively it is called as Upamoupmeya alamkara.

In first instance if first vastu is taken as upamana and second vastu as upmeya then in second instance first vastu is taken as upmeya and second vastu as upamana.

Example:-

You (the king) are complete as dharma and artha. Dharma and artha are complete in nature. In first instance dharma is upamana and artha is upmeya. In second instance dharma is upmeya and artha upamana. In both instances upamana and upmeya are distinguished with each other hence it is upamoupmeya alamkara.

3) Ka

Def

Linguistic
mathematical
reasoning

Ex

2) Arthantha ranyasa Alamkar:-

Def:-

When a common thing is projected as special it is called arthantha ranyasa. In both one is relevant matter and other one is irrelevant matter. When common attribute is backed by special attribute and vice versa is called as Arthantha ranyasa.

Example:-

Hanuman has crossed the ocean. What is impossible for great people. Here the first sentence of Hanuman crossing the ocean is the relevant matter, where the strength of hanuman is discussed. In this context the irrelevant matter is that great people can achieve every thing is highlighted here. Hence it is Arthantha ranyasa alamkar

3) Kavya Linga Alamkar:-

Def:-

The cause for a certain effect is said as Linga. And the effect which is relevant matter, it is backed up by a strong reason. When such type of sentences occur it is called as Kavya Linga Alamkara.

Example:- It is said as "Oh mandha and muda Kandarpa! I have conquered you because in my chitta lord Shiva resides".

In this sentence the effect that Kandarpa cannot reside in chitta because of the cause that Lord Shiva resides there. When Shiva resides then there is no place for Kardarpa, hence Kandarpa is won over.

4] Vinokti Alamkar :-

Def:-

Where upmaya is described without any comparison it is called Vinokti. The relevant matter is presented without any censure. The quality without which there is no shine but it is considered as very cheap, such kind of censuring is vinokti.

Example:-

The people are pleasing with education but those without vinaya are censurable people. They are equal to beast. Without modesty education does not shine in a person.

5] Nidharshna Alamkar:-

5] Nidharshana Alamkar:-

Def:-

When two sentences overlap to each other and look similar without any difference. It is called as Nidharshana Alamkara.

~~Ex~~ Example:-

Just a full moon cannot be taken as spotless without any mark. so also a generous person cannot be thought as spotless. The spotless behaviour of person is compared to spotless moon.

6] Vishekoti Alamkar:-

Def:-

When there is a strong reason for work to accomplish but still it is not done it is called as Vishekoti Alamkara. The cause of the work is visible but the fruit of work is not visible.

Example:-

Nobody can cross a person who is brave, clever and modest. A modest man even though he salutes, he cannot be overloaded overlooked because of his nature.

1] उपमैयौपमा:-

पर्यायिण द्वयौस्तच्छेदुपमैयौपमा मता ।

धर्मोऽर्थं इव पूर्णश्रीः अर्थं धर्मं इव त्वयि ॥

2] अथन्तरन्यासः:-

उवित्तिरथन्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः ।

हनुमानब्दिमत्तरत् दुष्करं किं महात्मनाम् ॥

3] काव्यलिङ्गम् :-

समर्थनीयस्यार्थस्य काव्यलिङ्गं समर्थनम् ।

जितीऽसि मन्द कन्दप. मच्चितीऽस्ति त्रिलोचनः ॥

4] विनीकितिः :-

विनीकितिर्थीद्विना किञ्चित् प्रस्तुतं हीनमुच्यते ।

विद्या हृद्यापि साऽवद्या विना विनयसम्पदम् ॥

5] निदर्शना:-

वाक्यार्थयोः सदृशयोः उक्यारूपो निदर्शना ।

यदातुः स्याभ्यता सौर्यं पूर्णन्दिवकलङ्कता ॥

6] विशेषीकितिरनुपत्तिः

विशेषीकितिरनुपत्तिः कार्यस्य सति कारण ।

नमन्तमपि धीमन्तं न लङ्घयति कक्षन् ॥

1 वाल्मीकेः पूर्वनाम किम्? (इ)

अ)आसः आ) वाल्मीकिः इ)रत्नाकरः ई)महर्षिः

2 वाल्मीकिना विरचितं काव्यं किम् ? (आ)

अ)भागवतम् आ) रामायणम् इ) भारतम् ई)रघुवंशं

3)श्रीमद्रामायणे कति काण्डाः सन्ति? (अ)

अ)सप्त आ) दश इ) नव ई) पञ्च

4) दशरथस्य ज्येष्ठपुत्रः कः? (इ)

अ) लक्ष्मणः आ) भरतः इ)श्रीरामः ई) शतृघ्नः

5) कविताशाखां कः आरुढवान्? (आ)

अ) श्रीरामः आ) वाल्मीकिः इ)दशरथः ई) लक्ष्मणः

6) इन्दीवरश्यामः कः ? (ई)

अ) लक्ष्मणः आ)भरतः इ) शतृघ्नः ई) श्रीरामः

7) कश्यपस्य पुत्रः कः ? (आ)

अ) दधीचि आ)मारीचः इ) ऋषिश्च ई)ब्रह्मश्च

8) इक्ष्वाकुभ्यो सर्वेभ्योऽपि अतिरिक्तः कः?(ई)

अ)दशरथः आ)लक्ष्मणः इ) भरतः ई)श्रीरामः

9)मैथिली का ? (आ)

अ) कौसल्या आ) सीता इ) सुमित्रा ई) कैकेयी

10) रामायणे कति श्लोकाः सन्ति? (इ)

अ) 42000 आ)20400 इ) 24000 ई) 40,200

11)कालिदासः कस्य महाराजस्य काले आसीत्?(इ)

अ) अक्रमार्कस्य आ)भास्करस्य इ)विक्रमार्कस्य ई)श्रीहर्षस्य

12)विक्रमार्कस्य सभायां कति कवयः सन्ति? (अ)

अ) नव आ)दश इ) सप्त ई) षट्

13 मकाकवि कालिदासः कः प्रान्तीयः?(इ)

अ) अयोध्या आ) काश्मीरम् इ) उज्जयनी ई) कन्याकुमारी

14 कुमारसम्भव महाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति? (आ)

अ) षोढा आ) सप्तदश इ) अष्टादश ई) नवदश

15) हिमालयाः कस्यांदिशि सन्ति? (अ)

अ) उत्तरस्यां आ) दक्षिणस्यां इ) प्राच्यां ई) उत्तीर्छां

16 कालिदासस्य बिरुदम् किम्? (इ)

अ) राजकुलगुरुः आ) पण्डितकुलगुरुः इ) कविकुलगुरुः ई) शत्रुकुलगुरुः

17. देवानाम् इत्यत्र का विभक्तिः ?(इ)

अ) सप्तमी आ) प्रथमा इ) षष्ठी ई) तृतीया

18 गाः इत्यत्र वचनम् किम्? (इ)

अ) एकवचनम् आ) द्विवचनम् इ) बहुवचनम् ई) सर्ववचनम्

19 “कर्वौ” इति पदस्य बहुवचनरूपम् किम्? (आ)

अ) कवीनाम आ) कविषु इ) कविभिः ई) कवयः

20 मति शब्दः कस्मिन् लिङ्गे वर्तते (अ)

अ) स्त्री आ) पुं इ) नपुंसक ई) सर्वलिङ्गः

21 “शिवराजविजयः” कीदृशं काव्यं ?(आ)

अ) पद्यकाव्यं आ) गद्यकाव्यं इ) उपवाचकं ई) रूपकम्

22 शिवराजविजयः इति काव्यं केन विरचितं? (इ)

अ) विष्णुशर्मा आ) पुल्लेल श्रीरामचन्द्रः इ) अम्बिकादतव्यासः ई) कालिदासः

23. शिवरीरः कुत्र निवसति? (आ)

अ) पाटलीपुत्रे आ) प्रतापदुर्ग इ) हिमालये ई) जयपुरे

24. बीजापुरस्य सेनापतिः कः ? (ई)

अ) सल्मानखान् आ) कबीर्खान् इ) अमीर्खान् ई) अफजल्खान्

25 अन्धकारे प्रतापदुर्गम् प्रति कः आगतवान्? (अ)

अ) सन्यासी आ) पुरुषः इ) स्त्री ई)वृद्धः

26 सन्यासिना सहागतस्य बालकस्य कति वर्षाणि सन्ति?(इ)

अ) त्रयोदश् आ) एकादश इ)द्वादश ई) चतुर्दश

27. सन्यासवेषधारी जनः कः? (अ)

अ) गौरीसिंहः आ) दौवारिकः इ)बालः ईफजल् खान्

28 शिववीरस्य सेनापतिः कः? (अ)

अ) गौरीसिंहः आ) दौवारिकः इ)बालः ई)अफजल् खान्

29 पञ्चतन्त्रम् केन विरचितम्? (अ)

अ)विष्णुशर्मणा आ)नारायणपणिडतेन इ)भासेन ई)श्रीहर्षण

30 पञ्चतन्त्रे कति भागाः सन्ति? (इ)

अ)पञ्चदश आ)पञ्चाशत् इ) पञ्च ई) पञ्चविंशति

31. महिलारोप्यं नाम नगरम् कः पालयति स्म? (ई)

अ) विष्णुशर्मा आ) शिवाजीराजः इ)प्रतापरुदः ई)अमरसिंहः

32 मकरस्य नाम किम्? (इ)

अ)रक्तमुखः आ) नीतिमुखः इ)करालमुखः ई) जलमुखः

33 समुद्रस्य तटे स्थितस्य वृक्षस्य नाम किम्?(ई)

अ) तमालविटपि: आ)शाल्मलीवृक्षः इ) वटवृक्षः ई)जम्बूवृक्षः

34 रक्तमुखम् इति कस्य नाम? (अ)

अ) वानरस्य आ)मकरस्य इ)सिंहस्य ई)व्याघ्रस्य

35. रक्तमुखस्य हृदयं का इच्छाति? (इ)

अ)वानरः आ)मकरः इ) मकरस्य भार्या ई)जम्बूवृक्षः

36 कौलिकाकारं मित्रं कः वर्जयेत् ? (इ)

अ)मूर्खः आ)विद्यावतः इ) प्राज्ञः ई) मानवः

37. “धातृणाम्” इत्यत्र सन्धिः कः? (आ)

अ)गुणसन्धिः आ) सर्वर्णदीर्घः इ) वृद्धिसन्धिः ई)यण्सन्धिः

38 “ सूर्योदयः ”इत्यत्र सन्धिः कः? (आ)

अ) सवर्णः आ) गुणसन्धिः इ) अयादिसन्धिः ई) यणसन्धिः

39 “परमैश्वर्यम् ” इत्यत्र सन्धिः कः? (ई)

अ) सवर्णदीर्घसन्धिः आ) गुणसन्धिः इ)यणादेशः ई) वृद्धिसन्धिः

40 “ साधिवति” इत्यत्र कः सन्धिः? (ई)

अ)सवर्णदीर्घसन्धिः आ)गुणसन्धिः इ)यणादेशः ई) वृद्धिसन्धिः

समीचिनं समाधानं विचिनुता ।

- | | | | | |
|--|------------------|---------------|-------------------|-----------------|
| 1. वाल्मीकेः पूर्वनामः किम् ? | (अ) आसः | (आ) वाल्मीकिः | (इ) रत्नाकरः | (ई) महर्षि |
| 2. वाल्मीकिना विरचितं काव्यं किम् ? | (अ) भागवतं | (आ) रामायणं | (इ) भारतम् | (ई) रघुवंशम् |
| 3. श्रीमद्रामायणे कति काण्डाः सन्ति ? | (अ) सप्त | (आ) दश | (इ) नव | (ई) पञ्च |
| 4. दशरथस्य ज्येष्ठपुत्रः कः ? | (अ) लक्ष्मणः | (आ) भरतः | (इ) श्रीरामः | (ई) शत्रृघ्नः |
| 5. कविताशाशां कः आरुढवान् ? | (अ) श्रीरामः | (आ) वाल्मीकिः | (इ) दशरथः | (ई) लक्ष्मणः |
| 6. इन्द्रीवरश्यामः कः ? | (अ) लक्ष्मणः | (आ) भरतः | (इ) शत्रृघ्नः | (ई) श्रीरामः |
| 7. कश्यपस्य पुत्रः कः ? | (अ) दधीचि | (आ) मारीच | (इ) ऋषिश्च | (ई) ब्रह्मश्च |
| 8. इक्ष्वाकुभ्यो सवेभ्योऽपि अतिरक्तः कः ? | (अ) दशरथः | (आ) लक्ष्मणः | (इ) भरतः | (ई) श्रीरामः |
| 9. मैथिली का ? | (अ) कौसल्या | (आ) सीता | (इ) सुमित्रा | (ई) कैकेयी |
| 10. रामायणे कति श्लोकः सन्ति ? | (अ) 42,000 | (आ) 20,400 | (इ) 24,000 | (ई) 40,200 |
| 11. कालिदासः कस्य महाराजस्य काले आसीत् ? | (अ) अक्रमार्कस्य | (आ) भास्करस्य | (इ) विक्रमार्कस्य | (ई) श्रीहर्षस्य |
| 12. विक्रमार्कस्य सभायां कति कवयः सन्ति ? | (अ) नव | (आ) दश | (इ) सप्त | (ई) षट् |
| 13. महाकवि कालिदासः कस्मिन् प्रान्तवासी ? | (अ) अयोध्या | (आ) काश्मीर् | (इ) उज्जयनी | (ई) कन्याकुमारी |
| 14. कुमारसम्भवमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति ? | (अ) षोडा | (आ) सप्तदश | (इ) अष्टादश | (ई) नवदश |

- हिमालयः कस्यां दिशि अस्ति ?
15. हिमालयः कस्यां दिशि अस्ति ?
 (अ) उत्तरस्यां (आ) दक्षिणस्यां (इ) प्राचीनिश्यां (ई) पश्चिमदिश्यां
16. कलिदसस्य बिरुदम् कि ?
 (अ) राजकुलगुरुः (आ) पण्डितकुलगुरुः (इ) कविकुलगुरुः (ई) शत्रुकुलगुरुः
17. "देवानाम्" पदम् विभक्तिः कि ?
 (अ) सप्तमी (आ) प्रथमा (इ) षष्ठी (ई) तृतीया
18. 'गाः' वचनम् कि ?
 (अ) एकवचनं (आ) द्विवचनं (इ) बहुवचनं (ई) सर्ववचनं
19. "कवौ" बहुवचनपदम् किम् ?
 (अ) कविनाम् (आ) कविषु (इ) कविभिः (ई) कवयः
20. "मति" शब्दम् लिङ्गः किम् ?
 (अ) स्त्री (आ) पुं (इ) नपुंसक (ई) सर्वलिङ्गः
21. "शिवराजविजयः" कीदूशां काव्यं ?
 (अ) पद्यकाव्यं (आ) गद्यकाव्यं (इ) उपवाचकं (ई) रूपकम्
22. "शिवराजविजयः" इति काव्यं कः विरचितम् ?
 (अ) विष्णुशर्मः (आ) पुल्लेल श्रीरामचन्द्र
 (इ) अम्बिकादत्तव्यासः (ई) कालिदासः
23. शिवीरः कु त्र निवसति ?
 (अ) पाटलीपुत्रे (आ) प्रतापदुर्गे (इ) हिमालये (ई) जयपुरे
24. बीजापुरराज्य सेनापति कः ?
 (अ) सल्मान् खान् (आ) कबीर खान् (इ) अमीर खान् (ई) अफ्जल खान्
25. अन्धकारे प्रतापदुर्गस्य समीपे कः आगतः ?
 (अ) सन्यासी (आ) ऋषिः (इ) साधुः (ई) अधोरा
26. सन्सासिनं सह आगतः बालस्य कति वर्षाणि सन्ति ?
 (अ) त्रयोदश (आ) एकादश (इ) द्वादश (ई) चतुर्दश
27. सन्यासिवेशधारी जनः कः ?
 (अ) शिववीरः (आ) गौरसिंह (इ) अफ्जल खान् (ई) कविः
 शिववीरस्य सेनापतिः कः ?
 (अ) गौरसिंह (आ) दौवारिकः (इ) बालः (ई) अफ्जल खान्
28. 'पश्चतन्त्रम्' केन विरचितम् ?
 (अ) विष्णुशर्मणा (आ) नारायणपंडितेन (इ) भाषेन (ई) श्रीहर्षेन

| | | | |
|--|-------------------|-------------------|------------------|
| 30. पञ्चतन्त्रे कति भागानि सन्ति ? | | | |
| (अ) पञ्चदशः | (आ) पञ्चाशत् | (इ) पञ्च | (ई) पञ्चविशंति |
| 31. महिलारोप्यं नाम नगरम् केन पालपति स्म ? | | | |
| (अ) विष्णुशर्मणा | (आ) शिवाजीराजा | (इ) प्रतापरुद्रेण | (ई) शिववीरेण |
| 32. मकरस्य नामः किम् ? | | | |
| (अ) रक्तामुखः | (आ) नीतिमुखः | (इ) करालमुखः | (ई) जलमुखः |
| 33. समुद्रस्य पटे स्थितस्य वृक्षस्य नाम किम् ? | | | |
| (अ) तमालविटपिः | (आ) शाल्मलीवृक्षः | (इ) वटवृक्षः | (ई) जम्बूवृक्षः |
| 34. रक्तामुखस्य नाम ? | | | |
| (अ) वानरस्य | (आ) मकरस्य | (इ) सिंहस्य | (ई) व्याघ्रस्य |
| 35. रक्तामुखस्य हृदयम् कारिच्छति ? | | | |
| ‘ (अ) वानरः | (आ) मकरः | (इ) मकरस्य भार्या | (ई) जम्बूवृक्षः |
| 36. कौलिकाकारं मित्रं कः वर्जयेत् ? | | | |
| (अ) मूर्खः | (आ) विद्यवतः | (इ) प्राज्ञः | (ई) मानवः |
| 37. “धातृणाम्” सन्धिनामः किम् ? | | | |
| (अ) गुणसंधिः | (आ) सवर्णः | (इ) वृद्धिसंधिः | (ई) यण्संधिः |
| 38. “तावत्र” सन्धिनामः किम् ? | | | |
| (अ) सवर्णः | (आ) गुणसंधिः | (इ) अयादिसंधिः | (ई) यण्संधिः |
| 39. “सुगण्णीशः” सन्धिनामः किम् ? | | | |
| (अ) जश्त्वसंधि | (आ) लत्वसंधि | (इ) ष्टुत्वसंधिः | (ई) उमुडागमसंधिः |
| 40. “नृपर्तिजयति” सन्धिनाम किम् ? | | | |
| (अ) जश्त्वसंधिः | (आ) अनुनासिकसंधि | (इ) विसर्गसंधि | (ई) ष्टुत्वसंधिः |